Name: SAMPLE, DOB: 18:12:1973

TOB: 01:45:00, PLACE: ballia (India)

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

जन्म दिनाकं	18:12:1973(मंगलवार)
जन्म समय	01:45:00
जन्म स्थान	ballia
अक्षांश	025:45:00N
रेखांश	084:10:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00
जी. एम. टी. समय	020:15:00
स्थानीय समय	001:51:40 hrs
सांपातिक काल	007:36:54 hrs
स्थानीय समय संस्कार	000:06:40
अयनांश	N.C.Lahiri(023:29:36)
सूर्योदय	06:37:05AM
सूर्यास्त	05:03:04PM
विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
संवत्सर अधिपति	इन्द्राग्नि

घात चक्र

राशि (सूर्य)	कुम्भ
मास	फाल्गुन
तिथि	5,10,15
वार	शुक्रवार
नक्षत्र	अश्लेषा
प्रहर	4
लग्न	सिहं
सूर्य सिद्धान्त योग	वज्र
करण	चतुश्पद

अवकहड़ा चक्र

लग्न	कन्या
लग्नाधिपति	बुध
राशि (चन्द्रमा)	कन्या
राशिपति	बुध
नक्षत्र	हस्ता
नक्षत्रपति	चन्द्रमा
नक्षत्र चरण	2
ऋतु	बसन्त
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	नवमी
तिथि श्रेणी	रिक्ता
तिथि पति	सूर्य
करण	गरिज
करण श्रेणी	चर
करणपति	वासुदेव
गण	देव
योनि	हस्त (स्त्री)
वर्ण	वैश्य
सूर्य सिद्धान्त योग	सौभाग्य
रज्जु	कंठ
वश्य	द्विपद
तत्व	अग्नि
विहग	वायस
तत्वाधिपति	मंगल
नाड़ी	आदि
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	Shaa
पाया	स्वर्ण

ग्रहों की स्थिति (लाल किताब)

लग्न कुण्डली

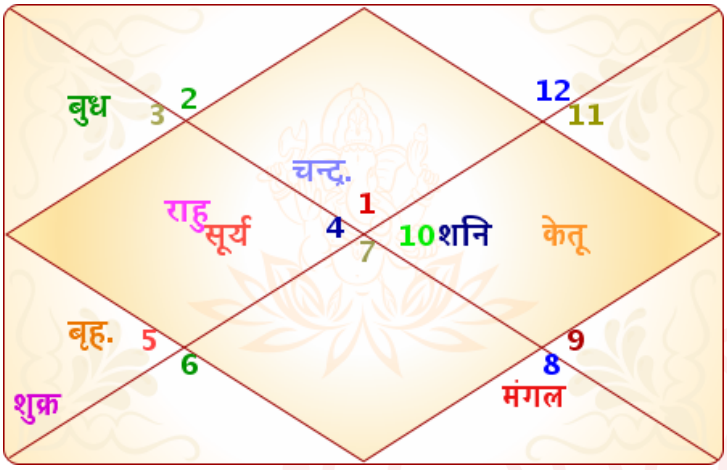

चन्द्र कुण्डली

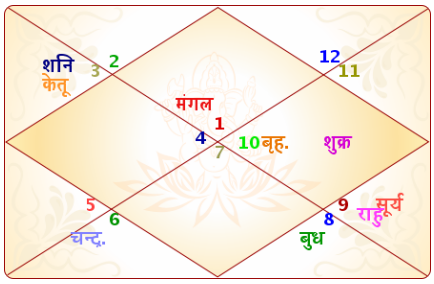

संसोधित कुण्डली

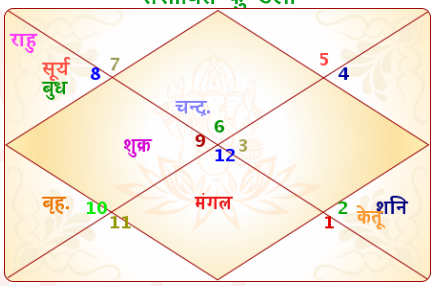

लाल किताब कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	4	5	ग्रह			चन्द्रमा				शुभ भाव
चन्द्रमा	1	4	ग्रह			सूर्य	हाँ		हाँ	शुभ भाव
मंगल	8	1, 8	ग्रह	हाँ						अशुभ भाव
बुध	3	3, 6	ग्रह		हाँ				हाँ	अशुभ भाव
बृहस्पति	5	9, 12	ग्रह	हाँ						शुभ भाव
शुक्र	5	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	...
शनि	10	10, 11	ग्रह	हाँ	हाँ					शुभ भाव
राहु	4		राशि					हाँ		शुभ भाव
केतु	10		राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव

लाल किताब कुण्डली से भाव स्थिति

भाव	भावस्थ ग्रह	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	भाग्य उत्प्रेरक
1	चन्द्रमा	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
2		शुक	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
3	बुध	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
4	सूर्य, राहु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
5	बृहस्पति, शुक	सूर्य	बृहस्पति				सूर्य
6		बुध	बुध,केतु	हाँ	बुध,राहु	शुक,केतु	केतु
7		शुक	शुक,बुध		शनि		शुक
8	मंगल	मंगल	मंगल,शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
9		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
10	शनि, केतु	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
11		शनि	शनि				बृहस्पति
12		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक,केतु	बुध,राहु	राहु

लाल किताब लग्न कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

सामान्य दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य							100		100
चन्द्र									
मंगल									
बुध									
बृह									
शुक									
शनि									
राहु							100		100
राहु									

ग्रहों की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य							✔		✔
चन्द्र									
मंगल				✔					
बुध									
बृह		✔							
शुक									
शनि	✔							✔	
राहु			✔				✔		✔
राहु	✔							✔	

टक्कर की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य							✔		✔
चन्द्र									
मंगल				✔					
बुध									
बृह		✔							
शुक									
शनि	✔							✔	
राहु			✔				✔		✔
राहु	✔							✔	

पाये की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य									
चन्द्र									
मंगल	✔							✔	
बुध									
बृह		✔							
शुक		✔							
शनि									
राहु									
राहु									

विश्वासघात की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य		✔							
चन्द्र							✔		✔
मंगल					✔	✔			
बुध									
बृह									
शुक									
शनि									
राहु		✔							
राहु									

सहचरी दिवार की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य				✔	✔	✔			
चन्द्र	✔						✔	✔	✔
मंगल									
बुध									
बृह									
शुक									
शनि									
राहु				✔	✔	✔			
राहु									

अचानक प्रहार की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य							✔		✔
चन्द्र				✔					
मंगल							✔		✔
बुध		✔							
बृह									
शुक									
शनि	✔		✔					✔	
राहु							✔		✔
राहु	✔		✔					✔	

परस्पर सहयोग की दृष्टि

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	राहु
सूर्य			✔						
चन्द्र					✔	✔			
मंगल									
बुध									
बृह									
शुक									
शनि									
राहु			✔						
राहु									

लाल किताब 35 वर्षीय चक्र

दशारम्भ का ग्रह : शनि दशारम्भ दिनांक : 18:12:1973

प्रथम चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/1973
मंगल	18/12/1975
शनि	18/12/1977

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/1979
केतु	18/12/1981
राहु	18/12/1983

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/1985
राहु	18/12/1986
केतु	18/12/1987

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/1988
बृहस्पति	18/12/1990
सूर्य	18/12/1992

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/1994
चन्द्रमा	18/08/1995
मंगल	18/04/1996

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/1996
सूर्य	18/04/1997
चन्द्रमा	18/08/1997

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/1997
शुक्र	18/12/1998
बुध	18/12/1999

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2000
शनि	18/12/2002
शुक्र	18/12/2004

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2006
मंगल	18/08/2007
बृहस्पति	18/04/2008

द्वितीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2008
मंगल	18/12/2010
शनि	18/12/2012

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2014
केतु	18/12/2016
राहु	18/12/2018

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2020
राहु	18/12/2021
केतु	18/12/2022

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2023
बृहस्पति	18/12/2025
सूर्य	18/12/2027

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2029
चन्द्रमा	18/08/2030
मंगल	18/04/2031

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/2031
सूर्य	18/04/2032
चन्द्रमा	18/08/2032

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2032
शुक्र	18/12/2033
बुध	18/12/2034

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2035
शनि	18/12/2037
शुक्र	18/12/2039

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2041
मंगल	18/08/2042
बृहस्पति	18/04/2043

तृतीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2043
मंगल	18/12/2045
शनि	18/12/2047

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2049
केतु	18/12/2051
राहु	18/12/2053

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2055
राहु	18/12/2056
केतु	18/12/2057

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2058
बृहस्पति	18/12/2060
सूर्य	18/12/2062

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2064
चन्द्रमा	18/08/2065
मंगल	18/04/2066

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/2066
सूर्य	18/04/2067
चन्द्रमा	18/08/2067

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2067
शुक्र	18/12/2068
बुध	18/12/2069

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2070
शनि	18/12/2072
शुक्र	18/12/2074

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2076
मंगल	18/08/2077
बृहस्पति	18/04/2078

लाल किताब 35 वर्षीय चक्र

दशारम्भ जन्म समय का ग्रह : शनि दशारम्भ दिनांक : 18:12:1973

प्रथम चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/1973
मंगल	18/12/1975
शनि	18/12/1977

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/1979
केतु	18/12/1981
राहु	18/12/1983

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/1985
राहु	18/12/1986
केतु	18/12/1987

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/1988
बृहस्पति	18/12/1990
सूर्य	18/12/1992

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/1994
चन्द्रमा	18/08/1995
मंगल	18/04/1996

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/1996
सूर्य	18/04/1997
चन्द्रमा	18/08/1997

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/1997
शुक्र	18/12/1998
बुध	18/12/1999

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2000
शनि	18/12/2002
शुक्र	18/12/2004

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2006
मंगल	18/08/2007
बृहस्पति	18/04/2008

द्वितीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2008
मंगल	18/12/2010
शनि	18/12/2012

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2014
केतु	18/12/2016
राहु	18/12/2018

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2020
राहु	18/12/2021
केतु	18/12/2022

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2023
बृहस्पति	18/12/2025
सूर्य	18/12/2027

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2029
चन्द्रमा	18/08/2030
मंगल	18/04/2031

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/2031
सूर्य	18/04/2032
चन्द्रमा	18/08/2032

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2032
शुक्र	18/12/2033
बुध	18/12/2034

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2035
शनि	18/12/2037
शुक्र	18/12/2039

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2041
मंगल	18/08/2042
बृहस्पति	18/04/2043

तृतीय चक्र

शनि दशा 6 वर्ष	
राहु	18/12/2043
मंगल	18/12/2045
शनि	18/12/2047

राहु दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2049
केतु	18/12/2051
राहु	18/12/2053

केतु दशा 3 वर्ष	
शनि	18/12/2055
राहु	18/12/2056
केतु	18/12/2057

बृहस्पति दशा 6 वर्ष	
केतु	18/12/2058
बृहस्पति	18/12/2060
सूर्य	18/12/2062

सूर्य दशा 2 वर्ष	
सूर्य	18/12/2064
चन्द्रमा	18/08/2065
मंगल	18/04/2066

चन्द्रमा दशा 1 वर्ष	
बृहस्पति	18/12/2066
सूर्य	18/04/2067
चन्द्रमा	18/08/2067

शुक्र दशा 3 वर्ष	
मंगल	18/12/2067
शुक्र	18/12/2068
बुध	18/12/2069

मंगल दशा 6 वर्ष	
मंगल	18/12/2070
शनि	18/12/2072
शुक्र	18/12/2074

बुध दशा 2 वर्ष	
चन्द्रमा	18/12/2076
मंगल	18/08/2077
बृहस्पति	18/04/2078

गोचर शनि

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर। सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	07/09/1977	04/11/1979	2.0 y.1.0 m.28 d.	ताम्र
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	15/03/1980	27/07/1980	0.0 y.4.0 m.12 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	04/11/1979	15/03/1980	0.0 y.4.0 m.10 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	27/07/1980	06/10/1982	2.0 y.2.0 m.10 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	06/10/1982	21/12/1984	2.0 y.2.0 m.15 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	01/06/1985	17/09/1985	0.0 y.3.0 m.17 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	धनु	17/12/1987	21/03/1990	2.0 y.3.0 m.3 d.	ताम्र
कंटक शनि	धनु	20/06/1990	15/12/1990	0.0 y.5.0 m.26 d.	लौह
अष्टम शनि	मेष	17/04/1998	07/06/2000	2.0 y.1.0 m.21 d.	रजत

द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	01/11/2006	10/01/2007	0.0 y.2.0 m.10 d.	ताम्र
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	16/07/2007	10/09/2009	2.0 y.1.0 m.26 d.	रजत
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	10/09/2009	15/11/2011	2.0 y.2.0 m.6 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	16/05/2012	04/08/2012	0.0 y.2.0 m.19 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	15/11/2011	16/05/2012	0.0 y.6.0 m.1 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	04/08/2012	02/11/2014	2.0 y.2.0 m.29 d.	रजत
कंटक शनि	धनु	26/01/2017	21/06/2017	0.0 y.4.0 m.24 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	धनु	26/10/2017	24/01/2020	2.0 y.2.0 m.29 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	मेष	03/06/2027	20/10/2027	0.0 y.4.0 m.18 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	मेष	23/02/2028	08/08/2029	1.0 y.5.0 m.14 d.	लौह
अष्टम शनि	मेष	05/10/2029	17/04/2030	0.0 y.6.0 m.12 d.	रजत

तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	27/08/2036	22/10/2038	2.0 y.1.0 m.25 d.	स्वर्ण
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	05/04/2039	13/07/2039	0.0 y.3.0 m.8 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	22/10/2038	05/04/2039	0.0 y.5.0 m.13 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	13/07/2039	28/01/2041	1.0 y.6.0 m.17 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	06/02/2041	26/09/2041	0.0 y.7.0 m.19 d.	स्वर्ण
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	28/01/2041	06/02/2041	0.0 y.0.0 m.9 d.	लौह
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	26/09/2041	11/12/2043	2.0 y.2.0 m.15 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	23/06/2044	30/08/2044	0.0 y.2.0 m.7 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	धनु	08/12/2046	06/03/2049	2.0 y.2.0 m.27 d.	ताम्र
कंटक शनि	धनु	10/07/2049	04/12/2049	0.0 y.4.0 m.25 d.	ताम्र
अष्टम शनि	मेष	07/04/2057	27/05/2059	2.0 y.1.0 m.20 d.	स्वर्ण

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (अयनाश : 023:29:36) चन्द्रमा 5.0 व.5.0 म.26 द.

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	चन्द्रमा	5.0 y.5.0 m.26 d.	18:12:1973
2	मंगल	7.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1979
3	राहु	18.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:1986
4	बृहस्पति	16.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2004
5	शनि	19.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2020
6	बुध	17.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2039
7	केतु	7.0 y.0.0 m.0 d.	13:06:2056
8	शुक्र	20.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2063
9	सूर्य	6.0 y.0.0 m.0 d.	14:06:2083

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
बृहस्पति	
शनि	18:12:1973
बुध	14:04:1975
केतु	13:09:1976
शुक्र	14:04:1977
सूर्य	13:12:1978

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	14:06:1979
राहु	10:11:1979
बृहस्पति	28:11:1980
शनि	04:11:1981
बुध	13:12:1982
केतु	10:12:1983
शुक्र	08:05:1984
सूर्य	08:07:1985
चन्द्रमा	13:11:1985

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	14:06:1986
बृहस्पति	24:02:1989
शनि	20:07:1991
बुध	26:05:1994
केतु	13:12:1996
शुक्र	31:12:1997
सूर्य	31:12:2000
चन्द्रमा	25:11:2001
मंगल	26:05:2003

बृहस्पति दशा

अन्तर्दशा	से
बृहस्पति	13:06:2004
शनि	01:08:2006
बुध	12:02:2009
केतु	20:05:2011
शुक्र	25:04:2012
सूर्य	25:12:2014
चन्द्रमा	13:10:2015
मंगल	12:02:2017
राहु	19:01:2018

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	13:06:2020
बुध	17:06:2023
केतु	24:02:2026
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	16:12:2032
राहु	25:01:2034
बृहस्पति	01:12:2036

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	14:06:2039
केतु	10:11:2041
शुक्र	07:11:2042
सूर्य	07:09:2045
चन्द्रमा	14:07:2046
मंगल	13:12:2047
राहु	10:12:2048
बृहस्पति	29:06:2051
शनि	04:10:2053

केतु दशा

अन्तर्दशा	से
केतु	13:06:2056
शुक्र	10:11:2056
सूर्य	10:01:2058
चन्द्रमा	17:05:2058
मंगल	16:12:2058
राहु	14:05:2059
बृहस्पति	01:06:2060
शनि	08:05:2061
बुध	17:06:2062

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	14:06:2063
सूर्य	13:10:2066
चन्द्रमा	13:10:2067
मंगल	14:06:2069
राहु	14:08:2070
बृहस्पति	14:08:2073
शनि	13:04:2076
बुध	14:06:2079
केतु	14:04:2082

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	14:06:2083
चन्द्रमा	01:10:2083
मंगल	01:04:2084
राहु	07:08:2084
बृहस्पति	02:07:2085
शनि	20:04:2086
बुध	02:04:2087
केतु	06:02:2088
शुक्र	13:06:2088

बृहस्पति ग्रह दशा

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	13:06:2004
शनि	25:09:2004
बुध	27:01:2005
केतु	17:05:2005
शुक्र	02:07:2005
सूर्य	08:11:2005
चन्द्रमा	17:12:2005
मंगल	20:02:2006
राहु	07:04:2006

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	01:08:2006
बुध	26:12:2006
केतु	06:05:2007
शुक्र	29:06:2007
सूर्य	30:11:2007
चन्द्रमा	15:01:2008
मंगल	01:04:2008
राहु	25:05:2008
बृहस्पति	12:10:2008

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	12:02:2009
केतु	09:06:2009
शुक्र	27:07:2009
सूर्य	12:12:2009
चन्द्रमा	23:01:2010
मंगल	02:04:2010
राहु	20:05:2010
बृहस्पति	21:09:2010
शनि	09:01:2011

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	20:05:2011
शुक्र	09:06:2011
सूर्य	05:08:2011
चन्द्रमा	22:08:2011
मंगल	19:09:2011
राहु	09:10:2011
बृहस्पति	29:11:2011
शनि	14:01:2012
बुध	08:03:2012

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	25:04:2012
सूर्य	05:10:2012
चन्द्रमा	23:11:2012
मंगल	12:02:2013
राहु	10:04:2013
बृहस्पति	03:09:2013
शनि	11:01:2014
बुध	14:06:2014
केतु	30:10:2014

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	25:12:2014
चन्द्रमा	09:01:2015
मंगल	02:02:2015
राहु	19:02:2015
बृहस्पति	04:04:2015
शनि	13:05:2015
बुध	28:06:2015
केतु	09:08:2015
शुक्र	26:08:2015

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	13:10:2015
मंगल	23:11:2015
राहु	21:12:2015
बृहस्पति	03:03:2016
शनि	08:05:2016
बुध	24:07:2016
केतु	01:10:2016
शुक्र	29:10:2016
सूर्य	19:01:2017

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	12:02:2017
राहु	04:03:2017
बृहस्पति	24:04:2017
शनि	08:06:2017
बुध	01:08:2017
केतु	19:09:2017
शुक्र	08:10:2017
सूर्य	04:12:2017
चन्द्रमा	21:12:2017

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	19:01:2018
बृहस्पति	30:05:2018
शनि	24:09:2018
बुध	10:02:2019
केतु	14:06:2019
शुक्र	04:08:2019
सूर्य	28:12:2019
चन्द्रमा	10:02:2020
मंगल	23:04:2020

क्या है कालसर्प योग ?

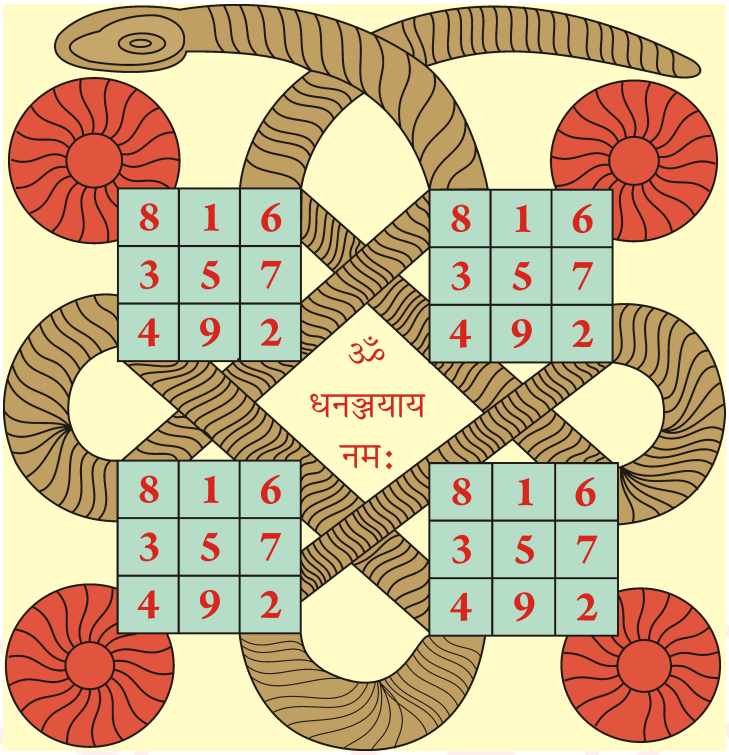

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

1– कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

2– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।

3– मानसिक तनाव।

4– आत्मविश्वास में कमी।

5– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।

6– गरीबी और धन की कमी।

7– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।

8– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।

9– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।

10–मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।

11–मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद है।

आपकी कुण्डली में चतुर्थ भाव में राहु और दशम भाव में केतु की उपस्थिति से शंखपाल नामक कालसर्प योग का निर्माण हो रहा है। ऐसा जातक विद्यार्जन नहीं कर पाता, विश्वासघात का भय बना रहता है। भूमि, माता, वाहन, नौकरों से परेशानी बनी रहती है। किसी भी सुख का उपभोग करना दिवास्वप्न सा होता है। गृहस्थ जीवन असंतोषजनक तथा कलहमय रहता है एवं माता का स्वास्थ्य खराब रहता है, परस्पर मतभेद रहते हैं और माता का सुख कम ही प्राप्त होता है। नौकरी–व्यवसाय में उतार–चढ़ाव देखने पड़ते हैं। जहां जातक का घर होता है, वह भूमि दूषित होती है।

कालसर्प योग एक अशुभ योग है। कभी–कभी प्रथम नजर में जातक की कुण्डली में कालसर्प योग दिखाई देता है, परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो उसमें कालसर्प भंग योग होता है जो प्रतिकूल प्रभाव नहीं दिखाता परन्तु फिर भी समस्त कालसर्प योग से प्रभावित व्यक्तियों को पूजा–पाठ व घर में कालसर्प योग शान्ति यंत्र स्थापति करना चाहिए।

कालसर्प योग शान्ति के उपाय

कालसर्प योग शाति के लिए निम्न उपाय हैं–

1– ताजी मूली का दान करें।
2– रसोई में बैठ कर ही भोजन करें।
3– भाद्रपद में सोलह श्राद्ध श्रद्धापूर्वक करें।
4– एक नारियल समुद्र में प्रवाहित करें।
5– नागपंचमी पर नागों के स्वरूप चांदी के नाग की पूजा करें। पितरों का आह्वान करें। पितरों की सद्गति प्राप्त हो ऐसा इस नाग से प्रार्थना करें। फिर नदी या समुद्र में नाग समेत पूजा में प्रयुक्त समस्त सामग्री प्रवाहित कर दें।ण
6– घर के प्रवेश द्वार की चौखट पर चांदी का स्वास्तिक लगायें।
7– कालसर्प योग के कारण वैवाहिक जीवन में बाधा आती है, तो पत्नी से दुबारा विवाह करें।
8– राहु हमेशा मंत्र से वशीभूत होता है, इसलिए उपासना को अधिक महत्व दें।
9– रात को सोते समय जौ के दाने सिरहाने पर रख दें। पौ फटते ही उन्हें पक्षियों को खिला दें।
10–वर्ष में एक दो बार आयु से अधिक की संख्या में जिन्दा मछलियां नदी में प्रवाहित कर दें।
11–भगवान गणेश का नित्य पूजन करें तथा ऊँ गणपतये नमः मंत्र का नित्य जाप करें।
12–प्रत्येक बुधवार को श्री गणेश जी की पूजा करें तथा बूंदी के लड्डुओं का भोग लगायें। गणेशचतुर्थी को गणपति का पूजन अवश्य करें।
13–शनिवार को पीपल को स्पर्श करें तथा मीठा जल अर्पित करें।
14–शयन कक्ष में मोर पंख लगायें।
15–प्रतिदिन पक्षियों को बाजरा इत्यादि डालें।
16–एक नारियल के गोले में छेद करके उसमें काले तिल, जौ, बूरा, देसी घी तथा मेवा आदि डालकर जहां

चीटियां हों, वहां पर दबा दें। यह प्रयोग शनिवार को करें।

17–एक मुट्ठी हरी मूंग राहु के मंत्र से अभिमंत्रित कर दान दें।

18–चांदी की सर्पाकृति की अंगूठी बुधवार को मध्यमा अंगुली में मंत्र से अभिमंत्रित करवाकर धारण करें।

सामान्य भविष्यफल

आप बहुत विनम्र स्वभाव वाले होंगे। आप अपनी बात उग्र तरीके से नहीं कह सकते हैं। साधारणतया, बात करते हुए आपके चेहरे पर मुस्कुराहट होगी। आपकी आवाज में हलकापन या धीमापन हो सकता है। आप श्रृंगार के शौकीन होंगे। इत्र आपको काफी पसंद होगा तथा बालों में क्रीम या कोई कीमती तेल का उपयोग कर सकते हैं। आप अपने शरीर पर विशेष ध्यान देंगे तथा अपने पहनावे का भी खास ख्याल रखेंगे।

आप मितभाषी होंगे। पहले आप दूसरों की बात को ध्यान से सुनेंगे और जब मौका मिलेगा तो अपनी बात कहेंगे। लेकिन आप जिस विषय पर भी बात करेंगे, उसके बारे में विस्तार से बतायेंगे।

गणित में आपकी विशेष रूचि होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ठीक स्थिति में है, तो गणित में विद्वान होंगे। लेकिन गणित का प्रयोग आप अपनी पढ़ाई में करने की जगह छोटी–छोटी बातों का हिसाब–किताब रखने में कर सकते हैं। आप गंभीर स्वभाव के होंगे। आप अपने दुख या मन की बात बहुत जल्द दूसरों से नहीं कहेंगे। लेकिन कभी मुश्किल पड़ने पर अपने मन की बात दूसरों से नहीं कहने के कारण आपको दुख अन्दर ही अन्दर झेलना पड़ सकता है, जिससे आपका शरीर प्रभावित हो सकता है, तथा आपको दिमाग तथा पेट संबंधी बीमारियों से पीड़ित होना पड़ सकता है।

किसी दूसरे व्यक्ति की बीमारी के समय उसकी सेवा करने में आपको बहुत खुशी मिल सकती है। आप उसकी छोटी–छोटी जरूरतों का ख्याल रखेंगे और अपने आराम की परवाह किये बगैर उसकी सेवा करेंगे। आप अपना जन्म–स्थान छोड़कर किसी दूसरी जगह पर रह सकते हैं, जो कि आपके भाग्योदय में काफी मददगार होगा। आप कुछ लंबी यात्रायें भी करेंगे और इनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आप काफी मिलनसार स्वभाव के होंगे। किसी के साथ दोस्ती करने में आपको कोई दिक्कत नहीं होगी।

आप शांत स्वभाव वाले एवं श्रृंगार में रूचि रखने वाले होंगे। आपमें एक विशेष समझ एवं ज्ञान होगा। आप अपनी बुद्धि का प्रयोग आम जीवन के कामों में अधिक करेंगे।

आपके जीवन में कई तरह के परिवर्तन हो सकते हैं और आप यात्राओं की तरफ आकर्षित होंगे। आपमें किसी चीज को गहराई से जानने की अभिलाषा होगी। किसी भी चीज की छोटी से छोटी बातों का गहराई से अध्ययन करेंगे। आप किसी भी काम को अपने ढंग से करेंगे। आप तकनीक का काफी प्रयोग करेंगे। आप निरीक्षक, आयकर अधिकारी या गणित के अध्यापक के रूप में काफी सफल हो सकते हैं।

आप अपने संचित धन को सही तरीके से खर्च करेंगे। आप अपने जीवन में सुन्दरता एवं सफाई पर काफी ध्यान देंगे। आप अपने घर की सजावट का भी विशेष ख्याल रखेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। अपने खान–पान का आप काफी ख्याल रखेंगे। किसी तरह की परेशानी होने पर थोड़ा–बहुत असर आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है। आपको किसी काम को अपने विचार से करना चाहिए। दूसरों से सलाह लेने के चक्कर में काम उलझ सकता है।

आप अपने घर पर अपने जीवनसाथी के काम–काज में हाथ बंटाने वाले होंगे। आप घर की हर चीज को दूसरों की तुलना में ठीक ढंग से रख सकते हैं।

अपनी मर्जी से शादी करने में आपके चयन में कोई कमी रह सकती है। आपका वैवाहिक जीवन ठीक रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ ठीक ढंग से निर्वाह करने की कोशिश करेंगे।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आप थोड़े–बहुत पाखंडी एवं धोखेबाज हो सकते हैं तथा अंतिम अवस्था में सन्यास प्राप्त कर सकते हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके व्यवसाय का संबंध क्रय–विक्रय से हो सकता है।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आप व्यापारी लोगों से मित्रता कर व्यापार के छुपे हुए भेद जानने की कोशिश कर सकते हैं। आप दूसरों से जानकारी प्राप्त कर अपने व्यापार में प्रयोग करेंगे, जिससे आपको व्यापार में सफलता प्राप्त होगी तथा काफी धन अर्जित करेंगे। आपके व्यापार में चारों तरफ से बरकत होगी।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से यदि आप चिकित्सक या न्यायाधीश हैं, तो आपको काफी सफलता प्राप्त होगी। इसके अलावा, लेखन, प्रकाशन, कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि से भी आपका संबंध हो सकता है।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आप शुद्ध हृदय तथा उत्तम चरित्र वाले नहीं हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिजन या मित्र आपको छोड़ सकते हैं। परन्तु आप काफी चतुर होंगे। आप अपनी बुद्धि का सदुपयोग नहीं कर सकते हैं। आप कभी–कभी चालाकी भी कर सकते हैं। आप चंचल स्वभाव के होंगे। आपको उत्तम संगति प्राप्त नहीं होगी तथा आपके जीवन का कुछ हिस्सा बुरी संगति में बर्बाद हो सकता है। अपने भाइयों के साथ आपके संबंध ठीक रहेंगे। आप अपने भाइयों को जरूरत पड़ने पर अपनी क्षमतानुसार हर संभव मदद करेंगे।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आप अपनी वृद्धावस्था में पहले की बुरी चीजों को भुलाने के ख्याल से सन्यास प्राप्त कर सकते हैं। आप धनोपार्जन के लिए गलत तरीकों का भी सहारा ले सकते हैं। सन्यासी होने के बाद भी आपके मन में आध्यात्मिकता की गहराई नहीं आ सकती है। आप साहसी एवं हिम्मती

होंगे, लेकिन थोड़े–बहुत आलसी भी हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से आपकी कुण्डली में मंगल अशुभ है, आपको अपने भाई–बन्धुओं से हानि हो सकती है। इस अशुभ फल को दूर करने के लिए आपको सूर्य को जल चढ़ाना या बकरी का दान करना या रात में मूंग भिगोकर सुबह पक्षियों को खिलाना चाहिए।

ग्रहफल (लाल किताब)

सूर्य चौथे भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। आप धन संग्रह करते रहेंगे और अन्य लोग इससे लाभ प्राप्त करेंगे। आपकी संतान करोड़पति होगी। आप किसी नई चीज का अविष्कार करेंगे और इस नयी खोज से आपको लाभ प्राप्त होगा। आपको नये कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अपने पैतृक व्यवसाय के अलाव कोई अन्य कार्य करेंगे तो आपको उसमें अधिक लाभ प्राप्त होगा। आप अपने देश को छोड़ कर विदेश में निवास कर सकते हैं। अपने पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। यदि आप अपने घर पर नल लगवाते हैं या कुँआ बनवाते हैं तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपको मन की शान्ति प्राप्त होगी। आपको अपनी 25 से 50 साल की आयु में बहुत लाभ प्राप्त होगा। पानी, कपड़े और दूध का व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी होगा और आप इससे बहुत लाभ कमायेंगे। विशेषकर कपड़े का व्यवसाय आपके लिये बहुत लाभकारी होगा। आप फल देने वाले वृक्ष लगायेंगे।

यदि आप रात में काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ प्राप्त होगा। आपको घर संबंधित कोई समस्या नहीं आयेगी। आप समुद्री यात्राओं से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको सरकारी विभाग से लाभ प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आपके लिये भाग्यशाली साबित होगी। आपको उनसे लाभ प्राप्त होगा। उन्हें अपने काम में उन्नति प्राप्त होगी। यदि आप वाहन से संबंधित कोई व्यवसाय करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा।

यदि आपमें चोरी करने की आदत हुई, आपने दूसरों के बनते काम बिगाड़े, किसी स्त्री के साथ गलत व्यवहार किया या पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध रखे तो आपका सूर्य कमजोर हो सकता है। यदि आपका सूर्य किसी कारण से कमजोर हो जाता है तो इसका बुरा असर आपके बच्चों पर पड़ सकता है। आपकी माता और बहन को समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप बिना किसी कारण के दुःखी रह सकते हैं। आपकी माता चिन्तित रह सकती हैं और उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह सकता है। आपको जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आपने दूसरों के बनते काम बिगाड़े तो आपको अपने कार्य में बाधाओं का

सामना करना पड़ सकता है और आपको रक्तचाप की समस्या हो सकती है। आपके माता–पिता के सुख में कमी आ सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– आपको चोरी से दूर रहना चाहिये।

2– महिलाओं के झगडे से दूर रहें।

उपाय : –

1– अन्धों को भोजन दें।

2– शुद्ध सोना पहनें।

चन्द्रमा पहले भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में चन्द्रमा पहले भाव में स्थित है। आपका जन्म काफी मिन्नतों के बाद हुआ होगा या आपका जन्म एक से अधिक बहनों के जन्म के बाद हुआ होगा। आपमें सबको आकर्शित करने की क्षमता होगी। आपको सफेद कपड़े पहनना पसन्द होगा। आपका स्वभाव शांत और विनम्र होगा। आप सुंदर होंगे। आप विद्वान होंगे और आपको कई भाश्शाओं का ज्ञान होगा। आपको पैतृक घर प्राप्त होगा। आप सम्पन्न होंगे और आपको जीवन में धन की कभी कमी नहीं होगी। यदि आपका विवाह 28 साल की आयु में होता है तो आप सारा जीवन सुखी रहेंगे। आपको किसी व्यक्ति की सम्पत्ति या धन प्राप्त होगा और इससे आप धनी हो जायेंगे। जब तक आपकी माता जीवित हैं, आपको धन की कमी नहीं होगी। आप दीर्घायु होंगे। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा। आपके जन्म के बाद आपके पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आपके पिता को व्यापार, आर्थिक लाभ और जीवन से संबंधित शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आप 24 से 27 साल की आयु के बीच कोई यात्रा करते हैं तो यात्रा से वापस आने के बाद अपनी माता का आशीर्वाद लें। इससे आपकी माता दीर्घायु होंगी। आपको 24 साल की आयु से पहले अपना घर नहीं बनवाना चाहिये। आपकी वृद्धावस्था सुख से पूर्ण होगी।

यदि आप 24 साल से पहले अपना घर बनवाते हैं, 28 साल की आयु में विवाह करते हैं, अपनी आया से झगड़ा करते हैं या गाय को कश्श्ट देते हैं तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है। यदि आपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप पानी में डूब सकते हैं। आपको मानसिक शांति नहीं मिल सकती है और आप चिन्तित रह सकते हैं। आपको मानसिक रोग हो सकता है। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता है। आपको दिल और ऑख से सम्बन्धित रोग हो सकते हैं। आपको पुत्र का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– अपनी माता या बूढ़ी औरतों से झगड़ा न करें।

2– आपको नैतिक मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिये।

उपाय : –

1– चांदी के गिलास में पानी या दूध पियें।

2– पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें।

मंगल आठवे भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार आप मांगलिक हैं। आपको अपने माता–पिता का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। अपने जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आप निडर और उत्साही होंगे। परिणामों की परवाह किये बिना आप चुनौतियों का मुकाबला करेंगे। आप न्याय पाने के लिये लड़ाई करने से नहीं हिचकिचायेंगे। आप अपने काम में गहरी रूचि लेंगे और उसे पूरे मन से करेंगे। भगवान आपका जीवन बुरी घटनाओं से बचायेगा। आप बाधाओं का मुकाबला चिन्तित हुये बिना करेंगे। आपको अपने ससुराल वालों से सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे।

यदि आप विधवा स्त्री के साथ झगड़ा करेंगे, हर समय अपने पास चाकू रखेंगे, लोगों के साथ झगड़ा करेंगे,

आपके घर पर जमीन के नीचे कोई भठ्ठी हुई तो आपका मंगल कमजोर हो सकता है। यदि आपका मंगल किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके छोटे भाई को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। उसके कारण झगड़ा हो सकता है। आपका भाई आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। किसी अचानक दुर्घटना के कारण आपको कोई रक्त संबंधी विकार हो सकता है या कोई नाखून संबंधी रोग हो सकता है। किसी व्यक्ति पर बिना किसी कारण क्रोध करना आपके लिये पश्चाताप का कारण बन सकता है। आपको हानि भी हो सकती है। कोई आप पर आक्रमण कर सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– अपने घर पर जमीन के नीचे कोई भठ्ठी न रखें।

2– तोता न पालें।

उपाय : –

1– विधवा का आशीर्वाद लें।

2– तन्दूर में मीठी रोटी पकाकर कुत्ते को खिलायें।

बुध तिसरे भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आप सदैव यात्रा करेंगे। आपको चिकित्सा व्यवसाय में यश प्राप्त होगा। आपके मित्र और संबंधी आपकी सहायता करेंगे। आपको कुछ खराब परिणामों के साथ उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आप दूसरों के लिये भाग्यशाली साबित होंगे। जो भी आपसे मिलेगा, उसे लाभ प्राप्त होगा। आपको आय के उत्तम साधन प्राप्त होते रहेंगे। यदि आप फल, खेती, कांसे के बर्तन, पशुपालन से सम्बन्धित व्यवसाय करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप अपने मामा और संतानों के लिये लाभकारी होंगे। आपको दमा का उपचार करना आता होगा। आप अपने व्यापार में प्रगति करेंगे। आप निडर होंगे, लेकिन झगड़ों से दूर रहेंगे। आपको बुरे कार्यों से घृणा होगी। किसी नये कार्य को आरम्भ करते समय आपके दिमाग में कई विचार आयेंगे और आप जिन पर विश्वास करेंगे, उनसे परामर्श करेंगे। आप अपने दिमाग से भी सोचेंगे।

यदि आप अपनी बुआ, बहन, पुत्री के धन का प्रयोग करेंगे, चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष लगायेंगे, दक्षिणमुखी घर में रहेंगे तो आपका बुध कमजोर हो सकता है। यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपका जीवन बहुत अच्छा नहीं हो सकता है। आपको भाइ–बहनों का सुख नहीं मिल सकता है। आपका उनसे झगड़ा हो सकता है। आपका भाग्य देर से उदय हो सकता है। आपको संतान सुख देर से प्राप्त हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– मामा और बुआ से न लड़ें।

2– चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष न लगायें।

1– मामा और बुआ से न लड़ें।

2– चौड़ी पत्ती वाला कोई वृक्ष न लगायें।

3– बुआ से झगड़ा न करें।

4– विधवा या अविवाहित महिला से अनैतिक संबंध न रखें।

उपाय : –

1– कन्याओं की सेवा करें या दुर्गा पूजा करें।

2– तोता पालें।

बृहस्पति पाचवें भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में बृहस्पति पॉचवें भाव में स्थित है। आपकी संतान प्रगति करेगी। अपनी आयु बढ़ने के साथ–साथ आप भी प्रगति करेंगे। आपकी 16वें साल की आयु के दौरान आपका भाग्य चमकेगा। आप संतान की तरफ से सुखी रहेंगे। आपको 60 साल की आयु तक उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको अपनी संतान के जन्म के बाद अपने दादा या पिता से मदद प्राप्त नहीं हो सकती है। आपकी संतान, जिसका जन्म बृहस्पतिवार को होगा, के जन्म के बाद आपका भाग्य चमकेगा। आपको आध्यात्म का परम ज्ञान होगा और आप यश प्राप्त

करेंगे। आप व्यापार या लेखन के द्वारा धन कमायेंगे। आप दूसरों की मदद करेंगे। आप धन संग्रह करेंगे और खुश रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में लोग आपको एक प्रधान की तरह मानेंगे।

यदि आप धर्म के विरूद्ध सोचेंगे, धर्म के नाम पर एकत्र किये गये दान का प्रयोग करेंगे, साधुओं से झगड़ा करेंगे तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है। यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप और अधिक क्रोध कर सकते हैं। यदि आप पराई महिलाओं के साथ संबंध रखेंगे तो आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप अधिकारियों के साथ बैर भाव रखेंगे या बिना मोल दिये कोई सामान लेंगे तो आपको हानि हो सकती है। यदि आप मांसाहारी भोजन करेंगे या आलस्य करेंगे तो आपको हानि हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– ईश्वर में आस्था रखें।

2– नाव से किसी तरह का कोई संबंध न रखें।

उपाय : –

1– 1–साधुओं की सेवा करें।

2– 2–धर्मशाला या धार्मिक स्थान को साफ करें।

शुक पाचवें भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में शुक्र पॉचवें भाव में स्थित है। आप विद्वान होंगे। आप अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे। आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। अपनी पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दपूर्ण होगा। आपकी पत्नी वफादार होंगी। आपको सफेद रंग की वस्तुओं से लाभ प्राप्त होगा। आप अपने समुदाय से प्रेम करेंगे। आपके विवाह के 5 साल बाद आपको धन और नौकरों का बहुत सुख प्राप्त होगा। आपको अपने व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी। जब तक आपकी पत्नी जीवित हैं, आपको किसी प्रकार का अभाव

नहीं होगा। आपका धन बढ़ेगा। आप अपने परिवार और देश से प्रेम करेंगे। आप अपने भाई के लिये अनुकूल होंगे। आप जीवन में बाधाओं का सामना नहीं करेंगे। आपका जीवन आनन्द और शांति से पूर्ण होगा।

यदि आपने अपना चरित्र खराब किया, अपने माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह किया तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है। यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आप कामुक हो सकते हैं और इस कारण से आपके सुख में बाधा पहुँच सकती है। यदि आपकी संगति बुरी हुई या आप प्रेम प्रसंग में पड़े तो भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। आपके कारण आपके मित्रों को परेशानी हो सकती है। आप दोहरी प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आपकी पत्नी का गर्भपात हो सकता है या आपको संतान प्राप्ति में देरी हो सकती है। यदि आप प्रेम विवाह करते हैं तो आपको पुत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती है। आपकी बहन या बुआ के धन का नाश हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– महिलाओं के लिये दीवाने न हों।

2– अपने माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह न करें।

3– प्रेम या अन्तर्जातीय विवाह न करें।

उपाय : –

1– अपने शरीर पर दही या दूध मलकर स्नान करें।

2– गाय की सेवा करें।

शनि दसवें भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आप महत्वाकांक्षी होंगे। आपको सरकार से लाभ प्राप्त होगा। यदि आप दूसरों का आदर करेंगे तो आपको भी सम्मान मिलेगा। प्रत्येक 7 साल की अवधि के बाद आपका धन बढ़ेगा। आपकी आयु के प्रत्येक 3 साल आपके लिये लाभकरी होंगे। आप धार्मिक और सद्गुणी

व्यक्ति होंगे, लेकिन अपनी वृद्धावस्था के दौरान आप निकम्मे हो सकते हैं। आपके ससुराल वालों का धन भी बढ़ेगा। आपको उत्तम वाहन का सुख प्राप्त होगा। यदि आप अपना व्यवसाय एक स्थान पर करते हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप मेहनती होंगे और अपना भाग्य स्वयं लिखेंगे। आप 39 साल की आयु तक पिता का उत्तम सुख प्राप्त करेंगे। 3रा, 4था, 9वॉ, 21वॉ, 33वॉ, 40वॉ और 57वॉ साल आपके जीवन का बहुत लाभकरी होगा। आपका धन, प्रगति और सम्मान इन सालों में 10 गुना बढ़ेगा।

यदि आप 48 साल की आयु के पहले घर बनाते हैं, मांस–मदिरा का सेवन करेंगे, अपना चरित्र खराब करेंगे, यात्रा वाला व्यवसाय करेंगे तो आपका शनि कमजोर हो सकता है। यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके माता–पिता, जीवनसाथी और ससुराल वालों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको हानि हो सकती है या आपकी प्रगति रूक सकती है। आपका धन और सम्मान लुप्त हो सकता है। आपके जीवन का 27वॉ साल अशुभ हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– मांस–मदिरा का सेवन न करें।

2– भाग–दौड़ के काम न करें।

उपाय : –

1– अपने पास हथियार न रखें।

2– अपने मस्तक पर केसर का तिलक लगायें।

राहु चौथे भाव मे

आपकी लाल किताब कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। आप सद्गुणी, धनी और दीर्घायु होंगे। आप तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। आप सज्जन होंगे और आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। आप बड़ी सम्पत्ति के मालिक होंगे। आपको अपने संबंधियों से धन और सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप दूसरों की मदद करेंगे और लोग

आपको परोपकारी व्यक्ति मानेंगे। आप दयालु होंगे और आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा। आप अपनी बहन और पुत्री के लिये धन खर्च करेंगे। आपको अपने ससुराल से धन और लाभ प्राप्त होते रहेंगे। आपके ससुराल वालों का धन बढ़ेगा। आप 24 साल की आयु के बाद धन संग्रह करेंगे। आपके पिता और संतान को उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे, परन्तु आपकी माता के साथ ऐसा नहीं हो सकता है। आपको भूमि, भवन, वाहन और जीवन के अन्य सुख प्राप्त होंगे। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो आप अपने विभाग में एक उच्च पद प्राप्त करेंगे। आपको बन्दूक या पिस्तौल रखने का शौक होगा।

यदि आपने पूजा का स्थान बदला, लकड़ी का कोयला अपने घर की छत पर रखा, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनायी, अपनी माता की उम्र की महिलाओं के साथ संबंध रखा तो आपका राहु कमजोर हो सकता है। यदि आपका राहु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको 34 साल की आयु के दौरान परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी माता को भी परेशानी हो सकती है। आपके ससुराल और ननिहाल वालों को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप अपनी रखैल पर धन बर्बाद करने के बाद अपना जीवन बर्बाद कर सकते हैं। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आप शेखचिल्ली की तरह दिन में सपने देख सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– अपनी माता की उम्र की महिलाओं के साथ अनैतिक संबंध न रखें।

2– गंगा स्नान करें।

उपाय : –

1– 1–घर पर गंगा जल से स्नान करें।

2– 2–पानी में सूखा धनिया प्रवाहित करें।

केतु दसवें भाव मे

आपकी लाल किताब कुंडली में केतु दसवें घर में स्थित है। आप धनवान होंगे और हर तरह की सुख–सुविधाओं

से परिपूर्ण होंगे। आपका जीवन खुशहाल होगा और आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको पुत्र संतान की तुलना में कन्या संतान से अधिक सुख प्राप्त होगा। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। आप शंकालु स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके जीवन में 40 वर्श की आयु तक समय मिला–जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेश्श प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिलाकर आपका जीवन सुखमय रहेगा।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, पराई स्त्रियों से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है। यदि किसी कारण वश केतु मंदा हो गया तो आपका चाल–चलन ठीक नहीं हो सकता है। आप या तो नपुंसक हो सकते हैं या आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती या आपको पुरुश्श संतान नहीं हो सकती है या संतान गोद लेने की नौबत आ सकती है। इसकी वजह से आपको बहुत परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं। आपके भाई आपको बर्बाद कर सकते हैं या आपके धन का दुरुपयोग कर सकते हैं। पराई औरत के साथ संबंध आपके दाम्पत्य सुख में बाधा पहुंचा सकता है। यह आपके जीवन के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। आपको 48 वर्श की आयु के आस–पास या माता की मौत के बाद पुत्र सुख मिल सकता हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्न परहेज और उपाय करें।

परहेज : –

1– चाल–चलन ठीक रखें।

2– कुत्तों से नफरत न करें।

उपाय : –

1– मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

2– घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

आपकी कुण्डली में लागु होने वाले ऋण

पितृ ऋण

आपकी कुण्डली में सूर्य न तो पहले भाव में और न ही ग्यारहवें भाव में है और शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह आपकी कुण्डली में पितृ ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए। यह पितृ ऋण सूर्य से सम्बन्धित है। आपको सूर्य से सम्बन्धित लाल किताब के उपाय करने चाहिए।

पितृ ऋण के कारण

यदि कुल पुरोहित को अपने किसी निजी कारण से बदला गया या घर के आस–पास का कोई धार्मिक स्थल नष्ट कर दिया गया हो या घर के आस–पास में कोई पीपल या बड़गद का पेड़ नष्ट कर दिया गया हो या पीपल के पेड़ के नीचे शौच कर्म किया गया तो पितृ ऋण लागू होगा।

पितृ ऋण के लक्षण और प्रभाव

लाल किताब के अनुसार, आपके बाल में जब सफेदी आने लगेगी तो घर की धन–सम्पत्ति अपने आप नष्ट होनी शुरू हो जायेगी और आप विभिन्न समस्याओं से घिर सकते हैं तथा सिर पर चोटी के स्थान से बाल गायब हो जाते हैं और आप गले में माला या कंठी पहनना शुरू कर सकते हैं। आपके बारे में गलत अफवाहें उड़नी शुरू हो सकती हैं। आपको बिना गलती ही जेल जाना पड़ सकता है। परिवार में व्यर्थ के तनाव रह सकते हैं। बने–बनाये काम आखिरी वक्त पर बिगड़ सकते हैं, परिवार में व्यर्थ के कलह शुरू हो जायेंगे, परिवार में किसी की बीमारी का पता नहीं चल सकता है तथा आपकी मेहनत का फल देरी से प्राप्त हो सकता है। शुभ कामों में देरी हो सकती है, अच्छी आमदनी होते हुए भी बचत नहीं होगी, अपने पिता से आपका मनमुटाव हो सकता है, आपके शरीर में अक्सर दर्द रह सकता है। आपके रोजगार में निरंतर गिरावट हो सकती हैएवं आप आर्थिक रूप से बर्बाद हो सकते हैं।

पितृ ऋण के उपाय

स्वयं का ऋण

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह आपकी कुण्डली में लागू हो रहे स्वयं के ऋण का परिचायक है।

स्वयं का ऋण के कारण

आप पूर्व जन्म में नास्तिक होंगे एवं परंपराओं का अपमान किया होगा या धर्म विरोधी कार्यों में संलग्न होंगे या अपने कुल की मर्यादा का उलंघन किया होगा, इसलिए आप पर स्व ऋण लागू होगा।

स्वयं का ऋण के लक्षण और प्रभाव

आपके घर में तन्दूर या भट्टी हो सकती है।आपके घर की छत के किसी सुराख से रोशनी आ रही होगी या हृदय रोग के लक्षण होंगे।आप अपने जीवन में उन्नति करेंगे और धन इकठ्ठा करेंगे। आप समाज में बहुत

सम्मानित भी हो सकते हैं, परन्तु आपका पुत्र ग्यारह महीने या ग्यारह साल का होता है तो आपके सम्मान और धन पर ग्रहण लग सकता है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है। यहां तक कि आप अपना शरीर भी नहीं हिला सकते हैं। निर्दोष होते हुए भी दण्ड भोगना पड़े या जीवन संघर्षों से भरा हो तो स्व ऋण का लक्षण माना जाएगा।

स्वयं का ऋण के उपाय

महत्वपूर्ण जानकारी (लाल किताब)

अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह में बैठ जायें, तो ऐसी कुण्डली को अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से संबद्ध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक परस्पर शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्तिथि पैदा हो जाती है। जातक की नौकरी या व्यापार में स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधों को भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष – आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

आधे अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते हैं। इस ग्रह की स्थिति का जातक की मानसिक स्थिति और व्यवसायिक जीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष – आपकी कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

धर्मी कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में बृहस्पति के साथ शनि बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथल–पुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कष– यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) नहीं है।

ग्रहफल और उपाय – लाल किताब

पांचवें भाव में स्थित बृहस्पति का फल

पाँचवां भाव बृहस्पति का अपना पक्का भाव है। लाल किताब में बृहस्पति को इज्जत–आबरू वाला व्यक्ति और ब्रह्म ज्ञानी कहा गया है। परन्तु काल–पुरुष कुण्डली के अनुसार, पाँचवें भाव में सूर्य की राशि होने के कारण ऐसा व्यक्ति बहुत ही जल्द गुस्सा हो जाता है।

यदि आपकी संतान बृहस्पतिवार के दिन पैदा होती है, तो आप जीवन में बहुत ज्यादा उन्नति करेंगे।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र पाँचवें भाव में एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आप अपनी शिक्षा और प्रतिभा से धन कमायेंगे। आपकी संतान की कमाई पर भी इसका शुभ प्रभाव पड़ेगा। आपको विवाहित स्त्रियों से अनैतिक संबंध नहीं रखना चाहिए, अन्यथा आपके धन पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

पांचवें भाव में स्थित बृहस्पति के उपाय और सावधानियाँ

1. कुत्ता पालें।
2. गणेश जी की पूजा करें।
3. स्कूल अध्यापक की सेवा करें।
4. नाग और केसर जल में प्रवाहित करें।
5. कोई भी दान और उपहार न लें।
6. पुजारियों और साधुओं की सेवा करें।
7. मंदिर से प्रसाद न लें।
8. चोटी रखें।
9. माँस–मदिरा का सेवन न करें।
10. अपना चरित्र ठीक रखें।
11. पूजा स्थल की नियमित सफाई करें।
12. बृहस्पतिवार का व्रत रखें।
13. पीपल के पेड़ की सेवा करें।
14. विष्णु भगवान की पूजा करें।
15. पुखराज पहनें, पुखराज के अभाव में हल्दी लगायें।
16. अपने घर में गेंदा या सूर्यमुखी का पौधा लगायें।

चौथे भाव में स्थित सूर्य का फल

सन् 1942 के लाल किताब के चौथे भाव में स्थित सूर्य को ''बुआ का लड़का'' कह कर पुकारा गया है। आप

दूसरों के लिए धन जोड़ेंगे, परन्तु इसका खुद उपयोग नहीं कर सकते हैं। आपकी संतान धनवान होगी। आप कोई नया अविष्कार कर सकते हैं।

लाल किताब के अनुसार, सूर्य के चौथे भाव में होने से आपकी माता और बहन के सुख में कमी आ सकती है और आपको घर छोड़कर विदेश में रहना पड़ सकता है। आप वो कार्य कर सकते हैं, जो कि आपके पूर्वजों ने नहीं किया होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु चौथे भाव मे एक साथ बैठे हुए हैं। यह एक शुभ स्थिति नहीं है।

चौथे भाव में स्थित सूर्य के उपाय और सावधानियाँ

1. पैतृक मकान में अंधो को रोटी खिलाना शुभ फल देता है।
2. बुआ के लड़के की सेवा करें।
3. लोहे अथवा लकड़ी की वस्तुओं का व्यापार न करें।
4. सोने, चाँदी अथवा कपड़ों का व्यापार उत्तम होगा।
5. माँस–मदिरा का सेवन न करें।
6. मछली का शिकार न करें अथवा न खायें।
7. खाकी रंग के धागे में ताँबे का सिक्का डालकर पहनें।
8. सोना पहनें।
9. बन्दर को गुड़ खिलायें।
10. सरकारी कर्मचारियों से बैर न करें।
11. बुरे धंधों से बचें।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आपकी माता जब तक जीवित हैं, तब तक आपको धन की कोई नहीं होगी। आप दीर्घायु होंगे, एवं आपको व्यवसाय नौकरी आदि में कभी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आप अपनी मर्जी से अपने किसी रिश्तेदारी में 28 वर्ष या 28 वर्ष से पहले विवाह करते हैं, तो आपकी होने वाली संतान पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि आपको 24 वर्ष या 24 वर्ष से पहले कोई संतान होती है, अथवा आप अपने पैसे से मकान बनवाते हैं, तो आपकी संतान पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आप 24वें वर्ष में विवाह करते हैं, तो यह चंद्रमा के शुभ प्रभाव को पूरी तरह से नष्ट कर देता है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति से बचने के लिए आपको चाँदी के गिलास में दूध पीना चाहिए। आपको ये भी

ध्यान रखना चाहिए, कि उस गिलास मे कोई गर्दन या टोटी ना हो, अन्यथा आपके माता के स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आप 100 दिन से अधिक की यात्रा पर जा रहे हैं, तो आपको किसी नदी में या समुद्र में तांबे का सिक्का फेंकना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आपको चंद्रमा से संबंधित वस्तुओं जैसे चाँदी के बर्तन, और दूध का व्यापार करने से बचना चाहिए। यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह चंद्रमा की शुभता को पूरी तरह से नष्ट कर देगा और आपके ऊपर भी इसका बहुत ही बुरा प्रभाव हो सकता है। इसी तरह से आपको दूध दान करने से बचना चाहिए।

यदि आपको रात में नींद नहीं आती है या आपको चैन नहीं मिलता है, तो आपको अपने बिस्तर के चारों पावों के नीचे तांबे के नाखून दबाने चाहिए। इसके अलावा, आपको किसी बरगद के पेड़ में पानी देना चाहिए। यदि आप अपनी माता की सेवा करते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं, तो यह आपकी उम्र के लिए बहुत ही लाभप्रद है। इससे आपके व्यापार और नौकरी पर भी शुभ प्रभाव होगा। यदि आप अपनी माता से चाँदी अथवा चावल का दान लेते हैं, तो यह आपका भाग्योदय करने में सहायक होगा। आपकी माता की मृत्यु के बाद आपका भाग्योदय होने की संभावना कम ही है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आप जब भी किसी यात्रा पर जायें, लौटते समय अपनी माता के चरण को स्पर्श अवश्य करें। यह आपकी माता के उम्र के लिए लाभप्रद है। यदि आप अपनी माता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्तित हैं, तो आपको लाल रंग के पत्थर का गुटका या गुड़ को जमीन में दबाना चाहिए।

यदि आप अपने किसी रिश्तेदार के साथ साझे में व्यापार करते हैं, तो आपको बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

यदि आप किसी व्यक्ति से बिना पैसे दिये कोई वस्तु लेते हैं, तो यह चंद्रमा की शुभता को कम करता है और इसका बुरा प्रभाव आपके जीवनसाथी पर पड़ सकता है। इस स्थिति से बचने के लिए आपको बूढ़ी स्त्रियों का आशीर्वाद लेना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा के मित्र ग्रह सातवें या आठवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपमें मिट्टी से सोना बनाने की कला होगी।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा शुभ है। लाल किताब के अनुसार, आपको बड़ी मात्रा में पैतृक संपत्ति प्राप्त होगी।

कभी–कभी दूसरे व्यक्ति भी अपना कीमती सामान आपके पास रखकर जायेंगे, जो कि बाद में आपका हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में चंद्रमा सोया हुआ है, जिसे अपनी उम्र के 24वर्ष से पहले आपको जगाना पड़ेगा। लाल किताब के अनुसार, आपको एक गाय पालनी चाहिए या आपको अपने घर में एक नौकरानी रखनी चाहिए अथवा 24 वर्ष से पहले विवाह कर लेना चाहिए, जिससे चंद्रमा सक्रिय हो जायेगा, अन्यथा चंद्रमा 25वें वर्ष में दुष्ट ग्रह के रूप में सक्रिय हो जायेगा। आपको मंगल की वस्तुओं जैसे शहद, सौंफ इत्यादि का दान करना चाहिए।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा के उपाय और सावधानियाँ

1. अपने पास लाल रूमाल रखें।
2. चारपाई के पायों में ताँबे की कील गाड़ें।
3. बरगद के पेड़ की जड़ में पानी दें।
4. यदि आप पुत्र के साथ यात्रा कर रहे हैं, तो नदी इत्यादि में ताँबे का पैसा डालें।
5. घर में यदि कुआं है, तो उस पर छत न डलवायें।
6. अपनी उम्र के 24 से 27 वर्ष के बीच विवाह न करें और अपने पैसे से मकान भी न बनवायें।
7. हरे रंग और साली से बचें।
8. अपने घर में चाँदी के ऐसे बर्तन जिसमें टोंटी लगे हों, न रखें।
9. अपने घर में चाँदी की थाली रखें।
10. पानी अथवा दूध पीने के लिए चाँदी के बर्तन का इस्तेमाल करें।
11. शीशे के बर्तनों का प्रयोग न करें।
12. अपनी माता का आशीर्वाद लें और उनके द्वारा दिये हुए चावल और चाँदी का दान अपने पास रखें।

पांचवें भाव में स्थित शुक्र का फल

लाल किताब में पाँचवें भाव में स्थित शुक्र को ''संतान से भरा हुआ घर– परिवार'' कहा गया है।

आपकी पत्नी जब तक जीवित रहेंगी, तब तक आपके काम–काज में बहुत बड़ी रूकावट नहीं आयेंगी। यदि आप भले स्वभाव के हैं, तो शुक्र का फल और भी शुभ हो जायेगा। आपको गंदे प्रेम संबंधों से बचना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि आप प्रेम विवाह अथवा माता–पिता की मर्जी के बगैर विवाह करते हैं, तो आपकी संतान पर इसका बहुत ही बुरा असर हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, आपको अपने चरित्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए, अन्यथा बर्बादी निश्चित है। आपके

लिए ईंट के भट्ठों का कारोबार उत्तम होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र की दृष्टि में कोई ग्रह नहीं है। लाल किताब के अनुसार, इस युति का आपके जीवनसाथी पर बुरा प्रभाव पड़ेगा और यदि आप इत्र या खुशबुदार वस्तुओं का कारोबार करते हैं, तो आप उसमें सफल नहीं हो सकते हैं।

पांचवें भाव में स्थित शुक्र के उपाय और सावधानियाँ

1. अपना चरित्र ठीक रखें।
2. गाय की सेवा करें।
3. आर्थिक सम्पन्नता के लिए अपने गुप्तांग दूध या दही से धोयें।
4. अपने माता–पिता की मर्जी के बगैर विवाह न करें।
5. बुढ़ी औरतों की सेवा करें।
6. हीरा पहनें।
7. पत्नी का कहना मानें और उनसे झगड़ा न करें।
8. अपने पहनावें पर ध्यान दें।

आठवें भाव में स्थित मंगल का फल

लाल किताब में आठवें भाव में मंगल को ''मौत का फंदा'' कहा गया है। आमतौर पर आठवें भाव में बैठा हुआ मंगल शुभ फल नहीं देता है। आप बहुत हिम्मत वाले होंगे। नतीजा हार हो या जीत, आप मुकाबला जरूर करेंगे।

यदि कोई विधवा स्त्री आपको श्राप देती है या बद्दुआ देती है, तो आपका भाग्य पूरी तरह नष्ट हो सकता है। आपको किसी विधवा स्त्री का आशीर्वाद लेते रहना चाहिए।

यदि आपका छोटा भाई आपसे चार या आठ साल छोटा है, तो यह मंगल के अशुभ होने की निशानी है। लाल किताब के अनुसार, आपका छोटा भाई आपकी मदद नहीं कर सकता है।

यदि आपके घर के अन्दर जमीन खोदकर कोई भट्ठी (शादी–विवाह के अवसर पर) बनाई गई हो, तो यह आपके लिए अशुभ फलदायक हो सकता है। आपको तंदूर में मीठी रोटी बनाकर 43 दिनों तक कुत्तों को खिलाना चाहिए।

आठवें भाव में बैठा हुआ मंगल आपके पिता के लिए शुभ नहीं हो सकता है। आपकी आँखों में खराबी एवं जोड़ों में दर्द हो सकता है। आपके मित्र शत्रु बन सकते हैं। 28 से 36 वर्ष तक की उम्र में आपके छोटे भाई आपके लिए कई प्रकार की परेशानियां खड़ी कर सकते हैं। आपको अपने घर में तंदूर नहीं बनाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है या उसमें चंद्रमा या बृहस्पति स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में मंगल का फल शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले, तीसरे, चौथे, आठवें या नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में अगर मंगल अशुभ भी है, तो उसका असर अशुभ नहीं होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल मेष या वृश्चिक राशि में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको गृहस्थी का सुख प्राप्त होगा।

आठवें भाव में स्थित मंगल के उपाय और सावधानियाँ

1. 8 मीठी और तंदूर में सिंकी रोटियां कुत्तों को डालें।
2. तीन धातु की अंगुठी पहनें।
3. गले में हमेशा चाँदी की चेन पहनें।
4. मृगछाला का प्रयोग करें।
5. 4 किलो रेवड़ी या बताशे बहते पानी में बहायें।
6. अपनी दादी से चाँदी लेकर अपने गले में पहनें।
7. मंगल के दिन पति–पत्नी स्नान करें, फिर लाल वस्त्र पहन कर ताँबे का पात्र चावलों से भरकर उस पर लाल चंदन का तिलक लगाकर रखें। एक माला गायत्री मंत्र का जाप करके वह पात्र हनुमान मंदिर में देकर आयें। सात मंगल यह उपाय करने से हनुमान जी प्रसन्न हो जाते हैं। जातक किसी भी विधवा स्त्री की सेवा करे।
8. जब मंगल का प्रभाव अधिक नीच हो रहा हो, तो मिट्टी के पात्र में शहद भरकर ढककर बाहर विराने में दबायें, यह उपाय तभी करें, जब भाव संख्या तीन/तीसरे भाव में बृहस्पति या चंद्रमा स्थित हो।
9. मंगल का सबसे बड़ा शत्रु बुध है। जब मंगल के साथ मिल जाये तो जातक के ननिहाल को बर्बाद कर देता है। यदि मामा घर छोड़कर कहीं बाहर चले जायें, तो केवल वहीं ठीक रहते हैं। तब नाक छेदन आवश्यक है। 100 दिन तक नाक में चाँदी डालकर रखने से बुध का दोष शांत हो जाता है।
10. विधवा स्त्रियों का आशीर्वाद लें।
11. रसोई घर में बैठकर भोजन करें।
12. अपने घर में एक अंधेरी कोठरी बनवायें।
13. धार्मिक स्थान में चावल, गुड़ और चने की दाल दान करें।
14. मिट्टी के बर्तन में गुड़ भरकर उसे श्मशान में दबायें।
15. रोटी पकाने से पहले तवे पर पानी का छींटा मारें।
16. महागायत्री का पाठ करें।
17. भाई की सेवा करें।

तीसरे भाव में स्थित बुध का फल

लाल किताब मे तीसरे भाव में स्थित बुध को बहुत अधिक शुभ नहीं माना गया है, परन्तु अपने भाई–बन्धुओं और संबंधियों पर इसका प्रभाव शुभ ही होता है। अन्य कोई आपके संपर्क में आये तो आपसे लाभ नहीं उठा पायेगा। आपकी धन–संपत्ति के लिए भी बुध शुभ प्रभाव देगा।

तीसरे भाव में स्थित बुध के समय पुश्तैनी जायदाद, आमदनी, मन की शांति आदि पर बुरा असर होगा। यहां पर बुध के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए साबुत मूंग रात में भिगोकर सुबह पक्षियों को डालना चाहिए और यह उपाय लगातार 43 दिन तक करना चाहिए। इस उपाय से व्यापार में भी प्रगति होगी।

यदि आपके घर का दरवाजा दक्षिण की तरफ है, तो लाल किताब के अनुसार, आपके जीवनसाथी, संपत्ति और आपके ससुराल पक्ष पर इसका बहुत बुरा असर हो सकता है।

आपकी कुण्डली में नौवां और ग्यारहवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, सभी स्थितियों में बुध का फल उत्तम होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह एक शुभ स्थिति है।

तीसरे भाव में स्थित बुध के उपाय और सावधानियाँ

1. फिटकरी से दाँत साफ करें।
2. देवी पर चाँदी का छत्र चढ़ायें।
3. माणिक पहनें।
4. भतीजी की सेवा करें।
5. नाक छेदवायें।
6. बुधवार के दिन बकरी का दान करें।
7. यदि आपकी संतान कष्ट में है, तो कुत्ता पालें।
8. पीले रंग की कौड़ियों को जलाकर उसकी राख नदी में बहायें।
9. चौड़े पत्तों वाले पौधे घर में न लगायें।
10. दक्षिणमुखी घर में ना रहें।
11. मां दुर्गा की पूजा करें और कुआंरी कन्याओं का आशीर्वाद लें।
12. तोता पालें।
13. ढाक के पत्तों को धोकर विराने में पत्थर से दबायें।
14. दमा की दवाई मुत में दें।
15. लड़की, बहन, बुआ, मौसी अथवा साली की सेवा करें और उनका आशीर्वाद लें।

16. हिजड़ों को हरी चूड़ियां, हरे रंग के कपड़े आदि दान करें।

दसवें भाव में स्थित शनि का फल

लाल किताब में दसवें भाव में स्थित शनि को ''किस्मत को जगाने वाला'' कहा गया है। आप अपना भाग्य खुद बनायेंगे। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता कम से कम आपकी उम्र के 48 वर्ष तक आपका साथ जरूर देंगे। आपको 15वें, 21वें, 33वें, 45वें और 57वें साल में खूब इज्जत और शोहरत मिलेगी।

दसवें भाव में शनि के होते हुए यदि आप दूसरों की भलाई करें, दिल से धर्मात्मा हों या रहमदिल हों, तो यहां बैठा हुआ शनि आपको बर्बाद कर सकता है।

लाल किताब के अनुसार, आपकी हर तरफ इज्जत होगी। यदि आप शराब ना पीयें तो शनि का फल और भी शुभ हो जायेगा। आपको अपना मकान 48 वर्ष की उम्र के बाद बनाना चाहिए, नही ंतो आपका धन बर्बाद हो सकता है।

यदि आपको किसी भी तरीके से शनि का अशुभ फल मिल रहा है, तो घर में पीतल के बर्तन में गंगाजल डालकर रखना चाहिए।

आपको एक जगह बैठकर काम करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में शनि का फल और भी अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य या चंद्रमा चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको जीव हत्या नहीं करनी चाहिए, नहीं तो आपकी आर्थिक स्थिति पर इसका बुरा असर होगा।

दसवें भाव में स्थित शनि के उपाय और सावधानियाँ

1. पीतल के बर्तन में गंगाजल डालकर घर में रखें।
2. दूसरों का सम्मान करें।
3. माँस–मदिरा का सेवन न करें।
4. चाचा की सेवा करें।
5. 43 दिन तक लगातार चने की दाल बहते हुए पानी में बहायें।
6. धार्मिक स्थानों की यात्रा करें।
7. दस अंधों को खाना खिलायें।

8. 48 वर्ष से पहने मकान न बनवायें।
9. जीव हत्या न करें।
10. अपने पास हथियार न रखें।
11. भाग–दौड़ वाले काम न करें।
12. भैरों मंदिर में शराब का दान न करें।
13. रोटी पर सरसों का तेल लगाकर कौओं और कुत्तों को खिलायें।
14. मजदूरों का पैसा अपने पास न रखें।

चौथे भाव में स्थित राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली (टेवा) धर्मी टेवा कहलायेगी। आपके घर में बहुत ज्यादा खर्च होगा, परन्तु ये सारा खर्च केवल शुभ कार्यों पर होगा। आप अपने परिवार का काफी ख्याल रखेंगे और बड़ी मात्रा में धन अर्जित करेंगे।

चौथे भाव में राहु सामान्यतः शुभ फल देता है, परन्तु यदि आप जमीन के नीचे पानी जमा होने वाली टंकी, घर के अन्दर भट्ठी, कोयला की बोरियों का अम्बार लगाना या आप अपनी छत बदलवाते हैं, तो राहु का शुभ फल नहीं रह जाता है।

चौथे भाव में राहु से पिता और पुत्र पर शुभ असर होता है, परन्तु माता पर राहु का असर शुभ नहीं रहता है।

48 वर्ष के बाद बृहस्पति का फल शुभ हो जायेगा।

आपका ननिहाल पक्ष भले ही ठीक हालत में हों, परन्तु आपकी उम्र के 24वें वर्ष के बाद स्थितियां शुभ नहीं रह सकती हैं।

आपकी 12, 24 या 48 वर्ष की आयु में या पुत्र की उत्पत्ति के बाद आपके माता–पिता की स्थिति में सुधार होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में है। लाल किताब के अनुसार, विवाह के ऊपरान्त आपके ससुराल में धन ठीक मात्रा में आने लगेगा, जिससे आपको फायदा होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप काफी धनवान होंगे और अपनी बहन एवं बुआ की मदद करेंगे।

चौथे भाव में स्थित राहु के उपाय और सावधानियाँ

1. 400 ग्राम या एक किलो धनियां बहते पानी में सात बुधवार तक बहायें।
2. हरिद्वार में गंगा स्नान करें।
3. कैसा भी गंदा पानी आपके घर के चाहरदीवारी के अन्दर नहीं जमा होना चाहिए।
4. सीढ़ियों के नीचे रसोई घर नहीं होना चाहिए।
5. एक साथ पूरा घर बनवायें।
6. घर की छत पर कोयला इत्यादि ईंधन न रखें।
7. सरस्वती जी की पूजा अर्चना करें।
8. गोमेद धारण करें।
9. तम्बाकु का सेवन न करें।
10. घर में या आंगन में धुआं न करें।
11. झूठी गवाही न दें।

दसवें भाव में स्थित केतु का फल

लाल किताब के अनुसार, आपको अपने भाई का हर तरह से ख्याल रखना चाहिए। यदि वो कोई गलती भी करता है, तो उसे क्षमा कर देना चाहिए। इससे केतु का फल शुभ हो जायेगा और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

यदि आप अपना चाल–चलन ठीक नहीं रखेंगे, तो आप बर्बाद हो सकते हैं।

यदि आपकी संतान पर केतु का अशुभ प्रभाव पड़ रहा है, तो घड़े की शक्ल के चाँदी के बर्तन में शहद भरकर रखने से औलाद पर शुभ प्रभाव होगा। यदि फिर भी केतु का अशुभ प्रभाव कम नहीं होता है, तो उस बर्तन को किसी सुनसान जगह पर मिट्टी के अन्दर दबायें। 48 वर्ष की उम्र के बाद घर में कुत्ता पालना भी केतु के अशुभ असर को दूर कर सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि शुभ स्थिति में उपस्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप मिट्टी को सोना बना सकते हैं और आपकी संतान भी योग्य होगी।

दसवें भाव में स्थित केतु के उपाय और सावधानियाँ

1. मकान की नींव में शहद और दूध दबायें।
2. चाँदी के बर्तन में शहद भरकर घर में रखें।
3. अपना चाल–चलन ठीक रखें।
4. 48 वर्ष की आयु के बाद अपने घर में कुत्ता पालें।
5. गणेश जी की पूजा करें।

6. 9 वर्ष से छोटे लड़कों को भोजन करायें।
7. काले और सफेद तिल को नाले में प्रवाहित करें।

लाल किताब से जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित कारण और उपाय

शिक्षा से संबंधित भविष्यफल और उपाय

यदि आप परीक्षा में लाल रंग का पेन जिसका कैप सुनहरा हो, जिसमें किसी भी रंग की स्याही भरी हो, उसका इस्तेमाल करेंगे, तो परीक्षा में अवश्य उतीर्ण होंगे।

जेहि पर कृपा करहि जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहि बानी।
मोरि सुधारिहि सो सब भांती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।

इस चौपाई का 108 बार प्रतिदिन प्रातः काल जप करें।

ऊँ माँनिसाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतोः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुना देकमवधीः काममोहितम्।

इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातःकाल जागते ही बिना किसी से बोले तीन बार जप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

जनक सुता जग जननी जानकी।
अजिसय प्रिय करूनानिधान की।
ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपा निर्मल मति पावउँ।

श्री जानकी अथवा श्री सीता राम जी के चित्रपट का पूजन करके इस मंत्र का 108 बार प्रतिदिन जाप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्यादेहु मोहिं हरहु कलेस विकार।।

श्री हनुमान जी की पूजा करके उपयुक्त दोहे का एक माला (108 बार) प्रतिदिन जाप करें। इससे बुद्धि एवं स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी।

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई।

अल्प काल विद्या सब आई।।

इस चौपाई का प्रतिदिन एक माला (108 बार) जाप करके विद्यालय जाने से निश्चय ही परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

लाल किताब के अनुसार, जो बच्चे पढ़ने में कमजोर हैं, उन्हें हरे रंग की तुरमली चाँदी की अंगुठी या नेकलेस में पहनने से लाभ हो सकता है।

बृहस्पतिवार को पीले कपड़े मे 7 हल्दी की गांठें और बेसन के लड्डू बांधकर नदी में प्रवाहित करने से परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

'ऊँ नमः शिवाय' का जाप करके लाल धागे में दो पाँच मुखी रूद्राक्ष के बीच में एक छेद मुखी रूद्राक्ष को शिवलिंग से स्पर्श कराके धारण करें।

'ऊँ गंग गणपतेः नमः' नामक मंत्र को ग्यारह बार परीक्षा आरम्भ होने से पूर्व जाप करें, परिणाम आपके पक्ष में होगा।

परीक्षा देने जाते समय किसी धार्मिक स्थान में आधा लीटर दूध दान करना उपयोगी साबित हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी संतान पढ़ने में कतरा रहा हो, या स्कूल ना जाने के लिए बहाने बनाती हो, या हठ करती हो, तो तांबे का एक चौकोर टुकड़ा सफेद धागे में बांधकर उसके गले में पहनायें।

'श्री कृष्ण प्रसंग' नामक मंत्र को पूष्य नक्षत्र या किसी शुभ दिन को लाल कलम से 17 बार सफेद पन्ने पर लिखकर परीक्षा के दौरान अपने जेब में रखें।

स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपको कोई गंभीर बीमारी होती है, तो आपको निम्न उपाय करना चाहिए– बुध से संबंधित वस्तुओं का प्रयोग ना करें। नौवें और ग्यारहवें भावों में स्थित ग्रहों के रंग के अनुसार, पत्थर जमीन में दबायें। सूर्य की वस्तुएं अपने पूर्वी दरवाजे पर ना लगायें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पाँचवें या छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी पत्नी बीमार

रहती हैं, तो उन्हें अपने बालों में सोने का हेयर पिन लगाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको रतौंधी होने की संभावना ज्यादा होगी।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको चर्म–रोग हो सकते हैं। गाय या बकरी का दान करें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पाँचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपका स्वास्थ्य बहुत ज्यादा खराब होता है, तो 43 दिन तक लगातार शुक्रवार से शुरू करके अपने गुप्तांग को दही या दूध से धोयें।

यदि आपके घर में कोई ना कोई हमेशा रोग ग्रस्त रह रहा है, बीमारी जाने का नाम नहीं ले रहा है, तो आपके घर में जितनी रोटी बनती है, उसमें चार मीठी रोटी जोड़कर महीने में एक बार अमावस्या या संक्रांति के दिन काले कौए, काली गाय या कुत्ते को खिलाना चाहिए, अथवा महीने में एक बार अन्दर से खोखले कद्दू को किसी धार्मिक स्थल पर दान करना चाहिए, अथवा रात को रोगी के सिरहाने एक, दो या पाँच रूपये का सिक्का रखकर प्रातः काल सफाई कर्मचारी को दान करें, अथवा यदि आप श्मशान से गुजर रहे हैं, तो एक या दो रूपये के सिक्के वहां जरूर फेंके।

धन, ब्यापार और रोजगार से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में बैठा हुआ है, लाल किताब के अनुसार, आपको दूध और दूध से बनी हुई वस्तुओं का व्यापार बिल्कुल नहीं करना चाहिए, धन और आयु पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है।

आपकी कुण्डली में, शनि दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको बृहस्पति से संबंधित वस्तुओं के कारोबार से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में, शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको सौन्दर्य प्रसाधन से संबंधित कार्य में घाटा पहुंच सकता है।

आपकी कुण्डली में, सूर्य राहु, केतु अथवा शनि के साथ स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने जीवन में धन की कमी महसूस होगी।

आपकी कुण्डली में, बुध आठवें, नौवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव को छोड़कर अकेले किसी भी भाव में बैठा हुआ है

और उस पर उसके शत्रु ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आप व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ स्थित हैं। लाल किताब में इसको दिखावे का धन की संज्ञा दी गई है।

आपकी कुण्डली में, राहु–सूर्य, राहु–चंद्रमा, केतु–सूर्य या केतु–चंद्रमा एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको नौकरी और आर्थिक मामलों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में, शुक्र दूसरे, पाँचवें, नौवें या बारहवें भाव में बृहस्पति के साथ बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके जीवनसाथी या जीवनसाथी के रिश्तेदार आपके लिए धन हानि का कारण बनेंगे।

आपकी कुण्डली में, सूर्य चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको सोने, चाँदी के व्यापार से लाभ प्राप्त होगां

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको दूध द्वारा बनी हुई वस्तुएं या दूध के व्यापार से हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप सरकारी अधिकारी हैं, कांसे के बर्तनों का व्यापार करते हैं, अथवा ईंट का भट्ठा चलाते हैं, तो लाभ की स्थिति में रहेंगे।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप शनि से संबंधित वस्तुओं जैसे– लोहा, कोयला आदि का कार्य करते हैं, तो लाभान्वित होंगे।

मकान से संबंधित महत्वपूर्ण योग, सावधानियाँ और उपाय

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। यदि आप अपनी उम्र के 24वें वर्ष से पहले अपना मकान बनवाते हैं, तो लाल किताब के अनुसार, आपको धन हानि हो सकती है। माता और संतान के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। उपाय के तौर पर जमीन में सौंफ दबायें।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण की तरफ है और मकान से बाहर निकलते समय सीधे हाथ पर रसोई और सामने स्नानघर या पानी का स्थान हो तो आपको कोई ना कोई कष्ट हो सकता है। धन हानि की भी संभावना है।

यदि आपके मकान पर किसी पेड़ की छाया पड़ रही है, तो यह मंगल के शुभ प्रभाव को नष्ट कर देता है।

यदि आपके मकान की दीवार के पास कटा और सूखा पीपल का पेड़ है, तो आपके परिवार और धन संपत्ति पर इसका बुरा असर पड़ेगा। मंगल का प्रभाव अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप दक्षिणमुखी घर में रह रहे हैं, तो यह आपके लिए हर प्रकार से नुकसानदायक होगा।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपनी उम्र के 48वें वर्ष से पहले मकान बनवाते या खरीदते हैं, तो मकान के मूल्य के बराबर धन हानि होगी, और आगे से धन में बढ़ोत्तर भी नहीं होगी।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने मकान की मरम्मत बहुत सोच–समझकर करवाना चाहिए। भूल से भी मकान की छत ना बदलें, शौचालय के दरवाजा या शीट बदलवाने से भी धन हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपके पास मकान होगा, परन्तु धन की कमी रहेगी। बृहस्पति या केतु का उपाय करें।

यदि आपका मकान बंद गली के अन्तिम सिरे पर स्थित है, और उसमें हवा सीधे आती है, तो आपके संतान पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है। ऐसे मकान में कभी ना रहें।

यदि आपके मकान पर किसी धार्मिक स्थल आदि की छाया पड़ रही है, तो घर में बीमारियां परेशान करती रहेंगी।

रसोई घर में खाना बनाने का चुल्हा और बर्तन धोने का स्थान एक ही प्लेटफार्म पर नहीं होना चाहिए, अन्यथा घर में कलह होती रहेगी। उपाय के तौर पर इन दोनों स्थानों के मध्य पंचमुखी हनुमान का चित्र लगायें।

घर के अन्दर यदि लोहे की चारपाई हो, तो पूर्व–दक्षिण दिशा में बिछायें।

घर के मालिक को दक्षिण–पश्चिम के कोने में सोना चाहिए।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार, स्त्रियों के लिए हानिकारक होगा। ऐसे मकान में केवल विधुर पुरूष ही सुखपूर्वक रह सकते हैं। यदि आप मुख्य द्वार पर तांबे की कील गाड़े, तो स्थिति सुखद हो सकती है। चाँदी की चौड़ी पत्ती दरवाजा के एक कोने से दूसरे कोने तक बिछा सकते हैं। घर पर मिट्टी का बंदर रखें, जिसका मुहं दक्षिण दिशा की ओर हो। बकरी का दान करें। दिन के दो बजे के बाद साबूत मूंग की दाल किसी धार्मिक स्थल पर दान करें।

यदि आपके मकान में कोई मिट्टी वाला स्थान नहीं है, तो यह परिवार की स्त्रियों के लिए हानिकारक हो सकता है और धन सम्पत्ति पर भी बुरा असर हो सकता है। निम्न उपाय करने से स्थिति सुखद हो सकती है। मिट्टी की बनी हुई औरत की मूर्ति घर में रखें। सफेद रूमाल में कपूर की टिकिया, देशी घी और रूई बांधकर रखें। घर में छोटे–मोटे कार्य करने के लिए नौकरानी रखें।

यदि आपके मकान में धन रखने के लिए तिजोरी, आला या तहखाना बना हुआ है, तो उसे बिल्कुल खाली ना रखें। बादाम अथवा छुआरे रख सकते हैं।

यदि आपके मकान में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान ना खोलें।

यदि आपको अपने घर की छत बदलनी है, तो पहले एक अस्थाई छत पुरानी छत के ऊपर बनायें।

आपकी कुण्डली में, मंगल आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको विवाह इत्यादि समारोहों के लिए घर से बाहर वाले हिस्से में भट्ठी नहीं बनवानी चाहिए। यदि मजबूरीवश ऐसा करना पड़े, तो भट्ठी से जली हुई मिट्टी निकालकर नदी में प्रवाहित करें, और भट्ठी में नई मिट्टी डालें।

लाल किताब के अनुसार, घर के मुख्य द्वार से बाहर निकलते समय सीधे हाथ की तरफ पानी का स्थान और उलटे हाथ की तरफ या पीठ की तरफ रसोई होना उत्तम होता है।

यदि आपके मकान पर पीपल इत्यादि की छाया पड़ रही है, तो यह आपके तरक्की के लिए नुकसानदायक हैं। आपको उस पीपल की जड़ में जल चढ़ाना चाहिए।

यदि आपके मकान के आस–पास कुआं है, तो उसमें भूलकर भी कुड़ा–करकट ना डालें। प्रतिदिन उसमें दूध डालने से आपकी उन्नति होगी।

घर के अन्दर किकर का पेड़ ना लगायें।

मकान या प्लाट का मुख्य द्वार उत्तर–पूर्व या पूर्व दिशा में होना चाहिए।

आपकी चंद्र राशि– वृष, कन्या या मकर है। आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में भी हो, तो आपको कोई हानि नहीं होगी।

लाल किताब के अनुसार, सफेद रंग या पेन्ट का प्रयोग मकान में सभी जगह किया जा सकता है। नीले रंग या पेन्ट का प्रयोग शयन कक्ष या कान्फ्रेंस हाल में करें।

हरे या क्रीम रंग का प्रयोग अध्ययन कक्ष में करें।

गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग भोजनालय में करें। पुलिस या मिलिट्री के स्थान पर लाल रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर है, तो उसमें सफेद रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो उसमें लाल, गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में है, तो उसमें हरे या पीले रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में है, तो उसमें नीले या हल्के रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–पूर्व दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण–पश्चिम दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर–पश्चिम दिशा में है, तो आपको अपने मकान में सफेद रंग का प्रयोग करना चाहिए।

आपको अपने मकान का मुख्य द्वार मकान के कम चौड़ाई वाले हिस्से में रखना चाहिए। यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दो पल्लों का है, तो यह आपको अधिक लाभकारी होगा। यदि मुख्य द्वार अन्दर की तरफ खुलता है, तो यह अधिक लाभकारी होगा।

आपको अपने मकान के उत्तर और पूर्व दिशा में दक्षिण और पश्चिम दिशा से अधिक खुला स्थान रखना चाहिए।

आपको अपने मकान की दक्षिण और पश्चिम की दीवार ज्यादा मोटी और ज्यादा ऊँची रखनी चाहिए।

मकान की छत की ढलान उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व में होनी चाहिए।

अपने घर के प्रत्येक कमरे का उत्तर–पूर्व वाला कोना खाली रखें।

मकान में बरामदा और खुली छत उत्तर और पूर्व में होनी चाहिए।

मकान में बालकनी उत्तर और पूर्व में होना चाहिए। बेसमेन्ट उत्तर–पूर्वी भाग में होनी चाहिए।

यदि मकान में पत्थर की मूर्ति लगा रहे हैं, तो उसे दक्षिण–पश्चिम दिशा में लगायें।

मकान के दक्षिण–पश्चिम वाले हिस्से में सम संख्या में वृक्ष लगायें।

मकान में तुलसी जी का पौधा पूर्व, उत्तर या उत्तर–पूर्व में लगायें।

मकान में खिड़कियों की संख्या उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक होनी चाहिए। दरवाजे और खिडकियों की संख्या सम होनी चाहिए, परन्तु संख्या का अन्त 10, 20 इत्यादि से नहीं होना चाहिए।

मकान में सीढ़ियां दक्षिण, पश्चिम या ईशान कोण को छोड़कर कहीं भी बनाई जा सकती हैं। सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए। सीढ़ियों का घुमाव दक्षिणावर्ती होना चाहिए।

यदि आप अपने मकान में पानी का हौज बनवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पूर्व में बनवायें, यह काफी लाभदायक होगा।

यदि आप छत पर पानी की टंकी रखवा रहे हैं, तो उसे उत्तर–पश्चिम दिशा में रखवायें। टंकी का रंग काला अथवा नीला हो तो बढ़िया रहेगा।

मकान में पूजा का स्थान ईशान, पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। भगवान की मूर्ति का मुख उत्तर या पूर्व की ओर रखें। पूजा घर का आकार पिरामिड जैसा रखें। पूजा घर के फर्श का रंग सफेद या हल्का पीला होना चाहिए। पूजा घर के दीवारों का रंग क्रीम, सफेद या हल्का नीला रखें।

मकान में रसोई घर दक्षिण–पूर्व दिशा में होना चाहिए। खाना बनाते समय अपना मुख पूर्व की ओर रखें। रसोई

घर की खिड़कियां पूर्व और दक्षिण दिशा में होनी चाहिए।

मकान में भोजनकक्ष पश्चिम दिशा में रखें। खाने की मेज आयताकार या वर्गाकार होनी चाहिए।

मकान में स्नानागार पूर्व, उत्तर या उत्तर–पश्चिम भाग में रखें।

मकान का शौचालय दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप मकान बनवाते या खरीदते हैं, तो धन की हानि निश्चित होगी।

विवाह, स्त्री और गृहस्थ–सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा लग्न में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, 24वें से 27वें वर्ष के बीच में विवाह ना करें।

आपकी कुण्डली में, शुक्र पाँचवें या छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने माता–पिता के मर्जी से विवाह करना चाहिए। प्रेम विवाह हरगिज नहीं करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, सूर्य शुभ भावों में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी स्त्री सुन्दर, सुघड़ और शिक्षित होगी।

आपकी कुण्डली में शनि के ऊपर सूर्य की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, जीवनसाथी से अनबन के कारण आपका दोबारा विवाह हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठे, नौवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में सूर्य–शुक्र, बृहस्पति–शुक्र, मंगल–चंद्रमा या मंगल–शुक्र की युति दूसरे भाव में है। लाल किताब के अनुसार, किसी स्त्री के कारण आपका धन नष्ट हो सकता है।शीघ्र विवाह हेतु– मंगल–पार्वती स्त्रोत का पाठ प्रतिदिन करें।

शीघ्र विवाह हेतु– स्नान के पश्चात कांसे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर मुहुर्त देखकर छाया पात्र निकालें।

शीघ्र विवाह हेतु– पीले वस्त्र में चने की दाल बांधकर बृहस्पतिवार के दिन किसी मंदिर में दान करें।

यदि विवाह में अत्यधिक विलम्ब हो रहा है, तो वाल्मिकी रामायण के बाल–काण्ड के सर्ग 73 का 43 दिन तक लगातार पाठ करें।

शीघ्र विवाह हेतु दुर्गा सप्तशती के श्लोकों का पाठ 43 दिन तक लगातार करें।

शीघ्र विवाह हेतु सात सोमवार शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।

संतान सुख से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में, शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपना चरित्र ठीक रखते हैं, तो आप निःसंतान नहीं होंगे।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको धर्म के नाम पर चंदा या दान नहीं लेना चाहिए, अन्यथा आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है।

आपकी कुण्डली में, शनि दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता की आयु लम्बी होगी।

आपकी कुण्डली में, चंद्रमा या बृहस्पति अपने शत्रु ग्रहों के साथ स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी माता, दादी या सास की उम्र कम हो सकती है।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति पहले से छठे भाव के बीच स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता की आयु लम्बी होगी और उनका आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में, सूर्य और चंद्रमा एक दूसरे के पक्के भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको संतान का सुख अवश्य ही प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में, सूर्य चौथे भाव में और शुक्र पाँचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपमें पुरुषत्व की मात्रा कुछ कम हो सकती है। आपको उपाय की जरूरत होगी।

आपकी कुण्डली में, मंगल, शुक्र या बुध पक्के भावों में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको संतान प्राप्ति में कोई भी बाधा नहीं आ सकती है और संतान भी समय पर होगी।

यदि आप बंद गली के मकान में रहते हैं तो आपको संतान संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है और नर संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। उपाय के तौर पर आपको बृहस्पतिवार से लगातार 43 दिन तक प्रतिदिन केसर का तिलक लगाना चाहिए।

यदि आप संतान संबंधी समस्या से ग्रस्त हैं, तो आपको अपने घर में हरिवंश पुराण या महाभारत का पाठ करना चाहिए।

यदि आप कुत्ते के नर संतान को अपने घर में रखते हैं, तो आपको संतान अवश्य होगी।

संतान की प्राप्ति के लिए गणेश जी की पूजा करना लाभदायक होता है।

यदि आपको संतान संबंधी कोई समस्या है, तो काले कुत्ते की सेवा करना या उसे अपने घर पर रखकर खाना खिलाना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

यदि किसी स्त्री को संतान हो, परन्तु जीवित ना रहे, तो लाल किताब में ऐसी स्थिति से बचाव के लिए बहुत ही साधारण और सफल उपाय बताया गया है– स्त्री के गर्भवती होने पर उसके बाजु पर लाल धागा बांध दें और संतान होने के पश्चात उस धागे को नवजात शिशु के बाजु पर बांध दें और स्त्री को नया लाल धागा पुनः बांधें। स्त्री के बाजु पर 18 महीने तक बंधा रहना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी स्त्री का बार–बार गर्भपात होता है, तो काला धागा उसकी कमर में बांधें और संतान के जन्म के बाद यह धागा संतान के बाजु पर बांधें।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की संतान जीवित नहीं रहती है, तो संतान के जन्मदिन पर मिठाई की जगह नमकीन खाद्य पदार्थ वितरण करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, प्रसव के समय स्त्री को शारीरिक कष्ट से बचाने और नवजात शिशु के स्वास्थ्य के लिए प्रसव पीड़ा के समय दो पीतल के बर्तन लेकर एक में मीठी वस्तु और दूसरे में दूध भर के स्त्री के हाथ से स्पर्श करवाकर रखना चाहिए, और शिशु के जन्म के बाद से किसी धार्मिक स्थान में दान करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की नर संतान जीवित न रहती हो, तो उन्हें किसी धार्मिक स्थान में शिशु को जन्म देना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि संतान को कष्ट हो, तो गाय, कौए अथवा कुत्तों को अपने भोजन का एक हिस्सा दें।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपके घर में एक छत को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

लाल किताब के अनुसार, आपके घर में कुएं को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

विदेश यात्रा और भ्रमण से संबंधित महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में, बुध तीसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपके जीवन में व्यापार से संबंधित यात्रायें अधिक होंगी।

लाल किताब में एक साथ बैठे ग्रहों का फल

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु एक साथ चौथे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह अति अशुभ युति है। आपकी 42 वर्ष की आयु में राहु आपकी संतान को कष्ट पहुंचा सकता है। आपको धन की हानि हो सकती है। आपको सरकारी कार्यों में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप अशुभता को दूर करने के लिए उपाय भी करते हैं, तो राहु का समय पूर्ण होने के बाद ही सूर्य अपना पूर्ण प्रभाव देगा। सूर्य का प्रभाव आपके लिए शुभ होगा। अशुभ प्रभाव मिलने पर आपके विचार कलुषित और द्वेषपूर्ण हो सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है या आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है, जिससे आपकी स्थिति खराब हो सकती है। ऐसा होने पर आप एक कपड़े में जौ के थोड़े दाने बांधकर घर के अंधेरे हिस्से में किसी वजनदार चीज से दबाकर रख दें। यदि आप अस्वस्थ है या आपको बुखार आता हो, तो आप जौ को गोमूत्र से धोकर नदी में बहा दें। राहु से संबंधित चीजें, जैसे बादाम, नारियल को बहते पानी में प्रवाहित करें। तांबे के सिक्के को रात्रि में आग में तपाकर सुबह बहते पानी में प्रवाहित करें। सिक्का प्रवाहित करने के तुरन्त बाद आपको पुत्र और नजदीकी संबंधियों के सामने नहीं जाना चाहिए– उन पर सूर्य और राहु का अशुभ प्रभाव हो सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र एक साथ पाँचवें भाव में स्थित हैं। यह युति रोगों और कष्टों से आपकी रक्षा करेगी। दोनों ग्रहों का संयुक्त प्रभाव 32 वर्ष की आयु तक रहेगा। विपरीत लिंगी व्यक्तियों से आपको सहायता प्राप्त होगी। आप विद्यार्जन और संतान के संबंध में सुखी होंगे। आप अपने ज्ञान से धन अर्जित करेंगे। आपको पहले बृहस्पति और बाद में शुक्र का शुभ या अशुभ फल मिलेगा। इस युति के अशुभ होने पर आपका विपरीत लिंगी व्यक्तियों की तरफ अधिक झुकाव हो सकता है और आप विलासी हो सकते हैं। आपमें संतान पैदा करने की शक्ति क्षीण हो सकती है। आपको संतान के जन्म से ही दुख प्राप्त हो सकते हैं। यदि आपने विपरीत लिंगी व्यक्तियों के साथ संबंध बनाये, तो आपको बार–बार धन–हानि हो सकती है। आपके धन की चोरी भी हो सकती है। अतः आपको अपना आचरण और व्यवहार पवित्र और ठीक रखना चाहिए।

आपकी कुण्डली में, शनि और केतु एक साथ दसवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह युति शुभ परिणाम प्रदान करती है। इसमें शनि की प्रमुख भूमिका होती है। इस युति के किसी अन्य ग्रह से जुड़ने पर तीनों का प्रभाव मंद पड़ जायेगा। आपके भाग्य का निर्णय आपकी 18 वर्ष की आयु के बाद होगा। आपमें संतानोत्पत्ति की क्षमता अधिक होगी। आपको एक रंग का जानवर ही पालना चाहिए। एक से अधिक रंगो का (चितकबरा) जानवर पालने से शनि और केतु अशुभ हो जायेंगे। घोड़ा पालने से कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

लाल किताब वर्षफल

18:12:2016--17:12:2017

वर्षफल कुण्डली (44)

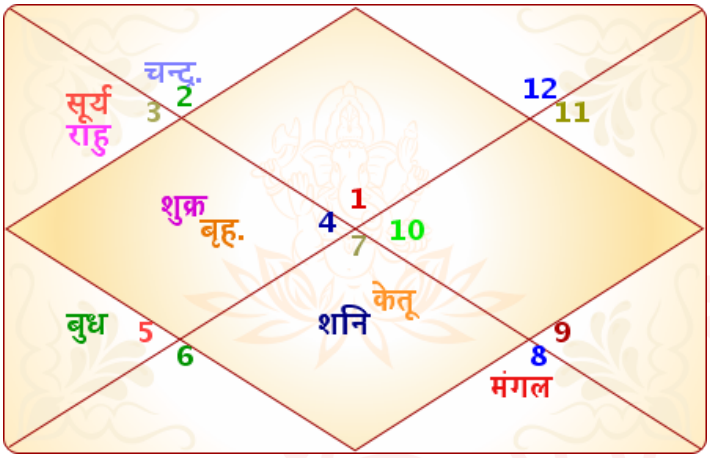

लग्न कुण्डली

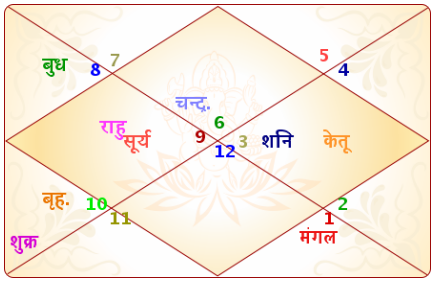

चन्द्र कुण्डली (लाल किताब)

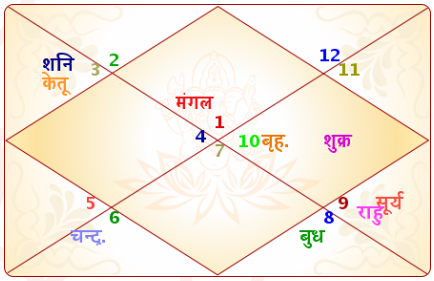

लाल किताब वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	3	5	राशि						हाँ	शुभ भाव
चन्द्रमा	2	4	ग्रह		हाँ	बृहस्पति	हाँ		हाँ	शुभ भाव
मंगल	8	1, 8	ग्रह	हाँ						अशुभ भाव
बुध	5	3, 6	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव
बृहस्पति	4	9, 12	ग्रह			चन्द्रमा			हाँ	शुभ भाव
शुक्र	4	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव
शनि	7	10, 11	ग्रह				हाँ		हाँ	शुभ भाव
राहु	3		ग्रह						हाँ	शुभ भाव
केतु	7		राशि						हाँ	अशुभ भाव

लाल किताब वर्षफल में भावों की स्थिति

भाव	भावस्थ ग्रह	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	भाग्य उत्प्रेरक
1		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
2	चन्द्रमा	शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
3	सूर्य, राहु	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
4	बृहस्पति, शुक	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
5	बुध	सूर्य	बृहस्पति				सूर्य
6		बुध	बुध,केतु		बुध,राहु	शुक,केतु	केतु
7	शनि, केतु	शुक्र	शुक,बुध		शनि		शुक्र
8	मंगल	मंगल	मंगल,शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
9		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
10		शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
11		शनि	शनि				बृहस्पति
12		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक,केतु	बुध,राहु	राहु

लाल किताब वर्षफल – 44

सूर्य तीसरे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य अशुभ स्थिति में है।

आपकी कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप पर गलत इल्जाम लग सकता है, जिसकी वजह से आप कानूनी विवाद में फंस सकते हैं। नौकरी/कारोबार में प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न होने के कारण आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। दिन में ही आपके धन की चोरी हो सकती है। किसी निकट संबंधी से झगड़ा या विवाद हो सकता है। आपको पराई स्त्रियों से संबंध नहीं रखना चाहिए, अन्यथा बदनामी हो सकती है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– 50 ग्राम जौ लाल कपड़े में बांध कर अपने घर के किसी अंधेरी कोठरी में रखें।
2– अपना चाल–चलन ठीक रखें।
3– सबका भला सोचें।

चन्द्रमा दूसरे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको स्त्री पक्ष से विशेष तौर पर सहयोग और सहायता की प्राप्ति होगी। वर्ष भर आपको हर्षदायक समाचारों की प्राप्ति होती रहेगी। अपने अधिकारियों से सहयोग और सहायता मिलेगी। अपने निकट सम्बन्धियों के घरों में होने वाले विवाह आदि समारोहों में जाना पड़ सकता है। धार्मिक स्थानों की यात्रा का योग है। आप तर्कपूर्ण भाषा का प्रयोग करके बहुत सारे फैसले अपने पक्ष में करवा सकते हैं।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– घर के मंदिर में मूर्तियों की स्थापना ना करें।
2– दस वर्ष से कम उम्र की कन्याओं को हरे रंग का कपड़ा दान करें।
3– बुजुर्ग औरतों का आशीर्वाद लें।

4– माता से चावल, चांदी का दान लेकर अपने पास रखें।

मंगल आठवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर आठवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको वाहन चलाते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। इस वर्ष कोई भी लेन–देन आपको सोच–समझ कर करना चाहिए। इस वर्ष आपको किसी विधवा स्त्री के साथ विवाद से बचना चाहिए। इस वर्ष आपके छोटे भाइयों को कई सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपने रसोई घर में बैठ कर भोजन ग्रहण करें।
2– अपने पास चांदी का चौकोर टुकड़ा रखें।
3– मिट्टी के बर्तन में गुड़ भरकर विराने में दबायें।
4– तंदूर में मीठी रोटियां पकाकर कुत्तों को खिलायें।
5– अपने जन्मस्थान से दूर ना रहें।
6– तोता या मैना अपने घर में ना पालें।

बुध पाचवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में अप्रत्याशित वृद्धि होगी। आप गुप्त विद्याओं और ज्योतिष जैसे विषयों में गहरी रूचि दिखायेंगे। इस वर्ष आप गंभीर होकर अपने नौकरी/कारोबार में मन लगायेंगे। आपको इस वर्ष अचानक ही धन लाभ होगा और आपकी कही भविष्यवाणियां सत्य होंगी।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– बायें हाथ में चांदी का छल्ला पहनें।
2– कमर में बेल्ट का प्रयोग करें।
3– गले में ताँबे का पैसा पहनें।
4– अपने घर में पूजा का स्थान ना बदलें।

5– घर की छत पर वर्षा का जल एकत्रित करें।

बृहस्पति चौथे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको गलत व्यसनों से इस वर्ष बच कर रहना होगा, अन्यथा शिक्षा अथवा शिक्षणेत्तर कार्यों में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने चाल–चलन पर भी विशेष ध्यान देना होगा। अपने पिता और दादा के साथ आपके संबंधों पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है।

वर्षफल में बृहस्पति का उपाय

बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– किसी के सामने नंगे बदन ना रहें।
2– अपने घर में टूटे हुए खिलौने ना रहने दें।
3– पीपल के वृक्ष में पानी दें।
4– गलत संगति से बचें।
5– अपने कुल–पुरोहित की सेवा करें।
6– किसी भी धार्मिक स्थान में चार किलो चने की दाल दान करें।

शुक्र चौथे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी पारिवारिक सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। अपने जीवनसाथी के अतिरिक्त दूसरी औरतों से भी आपके प्रेम संबंध बन सकते हैं। आपको अपने मामा अथवा मौसी से आर्थिक सहायता प्राप्त होगी। भूमि और भवन के मामलों में भी आप भाग्यशाली सिद्ध होंगे। आपके रहन–सहन के स्तर में भी वृद्धि होगी। आपको स्त्रियां भायेंगी तथा सौन्दर्य–वर्धक और सुगंधित वस्तुओं के व्यापार में काफी सफलता प्राप्त होगी।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– आडू की गुठली में सूरमा भरकर जमीन में दबायें।

2– अपना चाल–चलन ठीक रखें।

3– इस वर्ष प्रेम विवाह ना करें।

4– घर की छत पर कीचड़ का लेप करें।

शनि सातवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। इस वर्ष जीवनसाथी की अस्वस्थता और वैचारिक मतभेदों की वजह से वैवाहिक जीवन अशांत हो सकता है। आपको अपने साझेदारों पर शक नहीं करना चाहिए, अन्यथा आपके संबंध बिगड़ सकते हैं। चिकित्सा और रसायन से संबंधित व्यापार में आपको घाटा होने की संभावना है। गुस्से की मात्रा भी इस वर्ष ज्यादा ही होगी, इसलिए सावधानी के तौर पर आपको अपने पास कोई भी हथियार आदि नहीं रखना चाहिए। इस वर्ष बुरे लोगों की संगति भी आपके लिए भारी पड़ सकती है।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर विराने में दबायें।

2– बुरे लोगों की संगति ना करें।

3– डॉक्टर और केमिस्ट की संगति से बचें।

4– काली गाय की सेवा करें।

राहु तीसरे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आर्थिक मामलों में यह वर्ष भाग्यशाली होगा। नौकरी/कारोबार में उन्नति होगी और आपके शत्रु इस साल दबे रहेंगे। भविष्य में घटने वाली घटनाओं का आपको पूर्वाभास हो जाएगा और आपके लेखन में तलवार जैसी ताकत होगी। सट्टे, लॉटरी इत्यादि से आकस्मिक धन की प्राप्ति होगी। संतान पक्ष से कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। वर्ष के अन्त में भाग्योदय से संबंधित कोई विशेष घटना घटित हो सकती है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– हाथी दांत या इससे बनी हुई वस्तुओं का व्यवसाय ना करें।

2– हाथी की शक्ल के खिलौने अपने घर में ना रखें।

3– चांदी की डिब्बी में चावल डालकर अपने घर में रखें।

केतु सातवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष अपना चाल–चलन और व्यवहार काफी संयमित रखना होगा, अन्यथा हानि होने की संभावना है। दूसरों से झूठा वायदा ना करें। सत्य का पालन करें।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपना चाल–चलन ठीक रखें।

2– 4 केले 4 दिन बहते हुए पानी में बहायें।

3– 4 नींबू 4 दिन तक जल में प्रवाहित करें।

लाल किताब वर्षफल

18:12:2017--17:12:2018

वर्षफल कुण्डली (45)

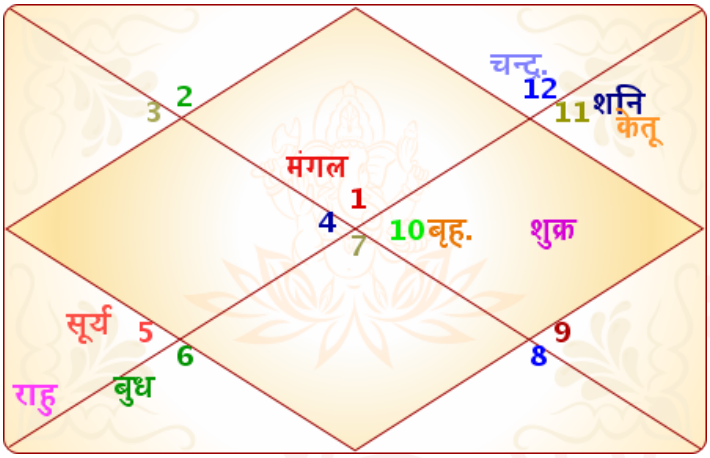

लग्न कुण्डली

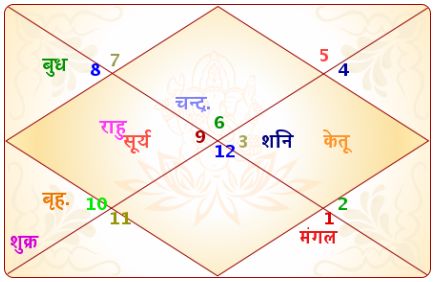

चन्द्र कुण्डली (लाल किताब)

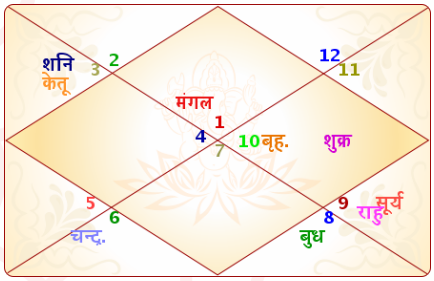

लाल किताब वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	5	5	ग्रह		हाँ				हाँ	शुभ भाव
चन्द्रमा	12	4	राशि						हाँ	अशुभ भाव
मंगल	1	1, 8	ग्रह		हाँ		हाँ		हाँ	शुभ भाव
बुध	6	3, 6	ग्रह				हाँ			शुभ भाव
बृहस्पति	10	9, 12	राशि			शनि			हाँ	अशुभ भाव
शुक्र	10	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	...
शनि	11	10, 11	ग्रह			बृहस्पति	हाँ	हाँ	हाँ	शुभ भाव
राहु	5		राशि						हाँ	अशुभ भाव
केतु	11		राशि						हाँ	अशुभ भाव

लाल किताब वर्षफल में भावों की स्थिति

भाव	भावस्थ ग्रह	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	भाग्य उत्प्रेरक
1	मंगल	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
2		शुक्र	बृहस्पति	हाँ	चन्द्रमा		चन्द्रमा
3		बुध	मंगल	हाँ	राहु	केतु	बुध
4		चन्द्रमा	चन्द्रमा	हाँ	बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
5	सूर्य, राहु	सूर्य	बृहस्पति				सूर्य
6	बुध	बुध	बुध,केतु		बुध,राहु	शुक्र,केतु	केतु
7		शुक्र	शुक्र,बुध		शनि		शुक्र
8		मंगल	मंगल,शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
9		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
10	बृहस्पति, शुक्र	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
11	शनि, केतु	शनि	शनि				बृहस्पति
12	चन्द्रमा	बृहस्पति	बृहस्पति		शुक्र,केतु	बुध,राहु	राहु

लाल किताब वर्षफल – 45

सूर्य पाचवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य अशुभ स्थिति में है।

आपकी कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके मित्र भी आपसे शत्रुतापूर्ण व्यवहार करेंगे। अपने जीवनसाथी से आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं या उनका स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। कुल मिलाकर, आपका दाम्पत्य जीवन इस वर्ष ठीक नहीं रह सकता है। आपको कानूनी मुकदमों से परेशानी हो सकती है और निर्णय आपके खिलाफ जा सकता है। इस वर्ष आप पर गलत इल्जाम लग सकता है तथा अपने अधिकारियों से आपके संबंध बिगड़ सकते हैं।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– लाल मुंह वाले बन्दर को गुड़ और चना खिलाएं।
2– झूठी गवाही ना दें।
3– 43 दिन तक लगातार सरसों के तेल की कुछ बूंदे जमीन पर गिरायें।

चन्द्रमा बारहवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थिति में बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको आयात–निर्यात से संबंधित व्यापार से धन प्राप्त हो सकता है। आप सामाजिक कार्यों में रूचि लेंगे। आध्यात्मिक विषयों में भी इस वर्ष आपकी रूचि रहेगी।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– बुरे कार्यों और झूठ बोलने से बचें।
2– रात्रि के समय दूध का सेवन ना करें।
3– घर में हाथी दांत से बनी हुई वस्तुएं ना ले आएं।

मंगल पहले भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में पहले भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको लोहा, लकड़ी एवं मशीनरी इत्यादि के कारोबार से लाभ प्राप्त होगा। समाज में आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपमें उत्साह और उत्तेजना की मात्रा ज्यादा होगी। इस वर्ष आप कोई भी कार्य भव्य तरीके से करेंगे। भाई–बन्धुओं का आपको सहयोग प्राप्त होगा। आपकी बहन के लिए भी यह वर्ष शुभ फलदायी है। आपका व्यवहार बुरे लोगों के साथ भी मधुर रहेगा।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– बुरे कार्यों और झूठ बोलने से बचें।
2– अपनी उम्र के व्यक्ति के साथ साझेदारी का कारोबार करें।
3– मुत में कोई भी उपहार ना लें।
4– हाथी दांत की वस्तुएं अपने घर ना ले आयें।
5– द्धयदि आपके बड़े भाई हैं, तो लाल रूमाल अपने पास रखें।

बुध छठे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर छठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको चोरी आदि की घटनाओं से धन–हानि होने की संभावना है। आपका कोई मित्र आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी का कारण बनेगा। इस वर्ष आप चर्म रोगों से भी परेशान हो सकते हैं। अपने ननिहाल से आपके संबंध बिगड़ सकते हैं। आपको लड़ाई–झगड़ों और विवादों से बचना चाहिए। पारिवारिक सुख में कमी आ सकती है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– बायें हाथ में चांदी की अंगुठी पहनें।
2– विराने में दूध से भरा बर्तन दबायें।
3– कोई भी शुभ कार्य अपनी बेटी या बहन के हाथों से करवायें।
4– अपनी बहन या बेटी की शादी उत्तर दिशा में ना करें।
5– अपने नौकर पर नजर रखें।

बृहस्पति दसवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष कई गलत अफवाहों का सामना करना पड़ सकता है। काफी संघर्ष के बाद ही सफलता आपके हाथ लगेगी। परिवार में भी लड़ाई–झगड़ों से आपको मानसिक अशांति का सामना करना पड़ सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी कड़ी मेहनत के बाद ही सफलता मिलेगी। इस वर्ष आपको हवाई किले बनाने से भी बचना चाहिए। यदि आप साधु–संतों का अपमान करते हैं या पीपल के पेड़ को काटते हैं, तो आपको आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है। आपके पिता और दादा का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है।

वर्षफल में बृहस्पति का उपाय

बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपनी नाक साफ रखें।
2– सोना पहनें।
3– 43 दिन तक ताँबे का पैसा बहते हुए पानी में बहायें।
4– साधु–संतों और अपने गुरूजनों की सेवा करें।

शुक्र दसवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपना चाल–चलन ठीक नहीं रखेंगे, तो आपके दाम्पत्य जीवन में दरार पड़ सकती है। आपके जीवनसाथी को खून या चमड़ी से संबंधित रोग हो सकता है। यदि आप मांस–मदिरा का सेवन करेंगे, तो आर्थिक रूप से आपको काफी क्षति पहुंच सकती है। आपको मूत्र संबंधित रोग होने की भी संभावना हो सकती है।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– आपकी पत्नी को अपने गुप्तांगों को दही से धोना चाहिए।
2– कपिला गाय का दान करना चाहिए।
3– अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए।
4– शराब, मांस और मछली का सेवन ना करें।

शनि ग्यारहवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी मानसिक और पारिवारिक सुख में कमी आएगी। आप ऋण संबंधी चिन्ताओं से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने चाल–चलन और व्यवहार को बहुत संयमित रखना होगा। आप अपने गुस्से पर काबू रखें और लड़ाई–झगड़ों से बचें। शराब और मांस–मदिरा का सेवन बिल्कुल ना करें।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– कोई भी शुभ कार्य करने से पहले घर में जल से भरा मिट्टी का घड़ा स्थापित करें।
2– सूर्योदय के समय मिट्टी पर शराब या सरसों का तेल गिरायें।
3– शराब और मांस का सेवन ना करें।
4– घर में शुद्ध चांदी की ईंट रखें।
5– दूसरों को धोखा देकर धन न कमायें।

राहु पाचवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको अपने जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध बनाकर रखना चाहिए, अन्यथा दाम्पत्य जीवन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। शिक्षा के क्षेत्रों में भी आपको बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। भाई बन्धुओं से भी मनमुटाव की संभावना है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– घर में चांदी का हाथी जिसका वजन कम से कम 60 ग्राम हो रखें।
2– दोबारा विवाह ना करें।
3– अपना चाल–चलन ठीक रखें।
4– घर की दहलीज के नीचे चांदी का पत्तर दबायें।

केतु ग्यारहवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके घर आने वाले अतिथियों की संख्या अधिक होगी, जिसकी वजह से आप पर आर्थिक बोझ बढ़ सकता है। यदि आप कोई शुभ कार्य करने जा रहे हैं, तो अपने पीछे मुड़कर ना देखें। अपनी संतान की ठीक तरह से देखभाल करें। अपना बीता हुआ कल दूसरों को ना सुनायें।क्रद्र्न्ह्मे"ू द्रद्र" ेर्द्रि ह्मक्तञ्द्र ह्म॰ श्द्र९ प्रSद्दद्र ऽ ञत्त्कहृद्र्नए ृहृ "बद्र ञद्रऽ १द्र- ञद्रत् "द्र९ ञप्रद्दप्र७द्रक्रदे् Sध् हेूक्रद्र ञप्र८द्रS ह्मद्रॉद्रध्ए प्रप्रहSध् "प्रह्म हृ ञद्र = ञद्रप्र७द्रS द्•द्र र्िं हृSद्दद्र ह्म॰ क्रप्र(ञद्र Sद्ृ ङद्रक्तद्र Sद्रक्र S्न्त् प्रद्र न्ह्म् ह्मे॰ द्दद्र् ञत् ध} त्तर्फ्ङ्- त् (ृद्रे ञत्त्ध् हेृद्दद्रत्त Sध् र्ध्ङि द्दन्ह्म हृ (ृद्रद्रद्र९ Sे- ञत्त्द्र ध्द्दद्र ह्मक्तञ्द्र S९ (०हृन्द्रे् Sद्र् त् हृत्तत्त्द्रक्रे्

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– आपकी पत्नी को चाहिए कि रात में अपने सिरहाने मूली रखकर सोयें और सुबह में उसे किसी धर्म स्थान में दान करें।

2– काला कुत्ता पालें।

3– ससुराल से काला–सफेद चकला (रोटी बनाने के प्रयोग में आने वाला उपकरण) मंगा कर घर में रखें।

लाल किताब वर्षफल

18:12:2018--17:12:2019

वर्षफल कुण्डली (46)

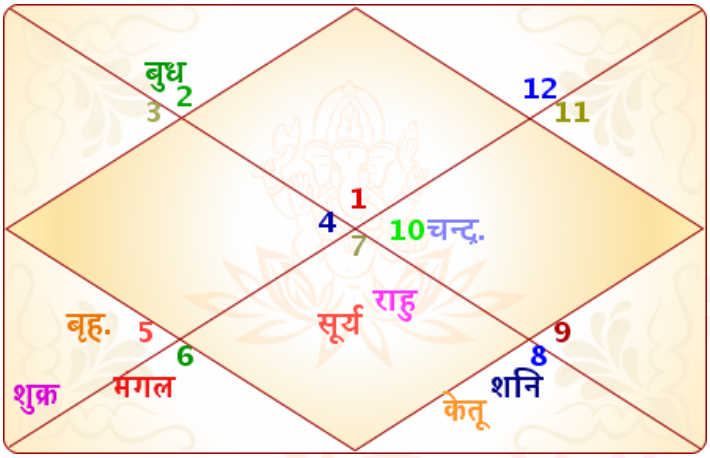

लग्न कुण्डली

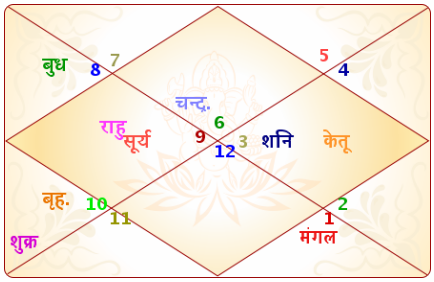

चन्द्र कुण्डली (लाल किताब)

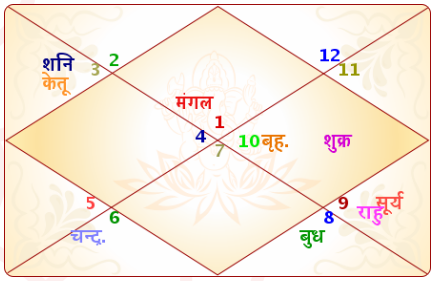

लाल किताब वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	7	5	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव
चन्द्रमा	10	4	राशि						हाँ	अशुभ भाव
मंगल	6	1, 8	राशि			केतु			हाँ	...
बुध	2	3, 6	राशि				हाँ			शुभ भाव
बृहस्पति	5	9, 12	ग्रह	हाँ						शुभ भाव
शुक्र	5	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	...
शनि	8	10, 11	ग्रह	हाँ			हाँ			शुभ भाव
राहु	7		राशि						हाँ	अशुभ भाव
केतु	8		राशि			मंगल	हाँ			...

लाल किताब वर्षफल में भावों की स्थिति

भाव	भावस्थ ग्रह	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	भाग्य उत्प्रेरक
1		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
2	बुध	शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
3		बुध	मंगल	हाँ	राहु	केतु	बुध
4		चन्द्रमा	चन्द्रमा	हाँ	बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
5	बृहस्पति, शुक	सूर्य	बृहस्पति				सूर्य
6	मंगल	बुध	बुध,केतु		बुध,राहु	शुक,केतु	केतु
7	सूर्य, राहु	शुक्र	शुक,बुध		शनि		शुक्र
8	शनि, केतु	मंगल	मंगल,शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
9		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
10	चन्द्रमा	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
11		शनि	शनि	हाँ			बृहस्पति
12		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक,केतु	बुध,राहु	राहु

लाल किताब वर्षफल – 46

सूर्य सातवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपनी संतान के लिए चिन्ता लगी रहेगी। आपके घर में अग्निकांड हो सकते हैं। पत्नी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। व्यर्थ की धन हानि होने से आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं, तो आपको घाटा उठाना पड़ सकता है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– कोई भी कार्य मीठी चीज खाकर और पानी पीकर शुरू करें।
2– अग्नि में आहुति दें।
3– नमक कम खायें।
4– जमीन में ताँबे के सात चौकोर टुकड़े दबायें।

चन्द्रमा दसवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको रक्त, दांत और कान से संबंधित रोग हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति नहीं बेचनी चाहिए। आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। समाज में आपकी मान–प्रतिष्ठा में कमी आ सकती है।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– माता का चरणस्पर्श कर आशीर्वाद लें।
2– रात में दूध का सेवन ना करें।
3– द्धयदि आप डॉक्टर हैं, तो मुत में दवाई ना दें।
4– अपना चाल–चलन ठीक रखें।

मंगल छठे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में छठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके मित्रों की संख्या में वृद्धि हो सकती है। धार्मिक क्रिया–कलापों में आप बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे। विदेशी संबंधों से आपको लाभ प्राप्त होगा। इस वर्ष आपका ईवश्र पर विश्वास भी बढ़ेगा। लिखने–पढ़ने से संबंधित कार्यों में आपको सफलता प्राप्त होगी। पैसों के लेन–देन के कारोबार से आपको बड़ी मात्रा में धन प्राप्त होगा। आपका जीवन संतों की तरह रहेगा।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– नीम का वृक्ष लगायें।
2– रात को सिरहाने पानी रखकर सुबह किसी पेड़ की जड़ में डालें।
3– पितरों का श्राद्ध करें।
4– अपने घर में 9 मन अनाज हमेशा रखें।

बुध दूसरे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके प्रकाशन और दलाली इत्यादि के कार्यों में इस वर्ष उल्लेखनीय प्रगति होगी। व्यावसायिक सफलता के लिए यह वर्ष उत्तम होगा। इस वर्ष आप शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रहेंगे। पिता और दादा से आपको आर्थिक लाभ हो सकता है। वाद–विवाद में आप अपनी राय बार–बार बदल सकते हैं। आपको इस वर्ष सफलता के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– चावल और दूध किसी धार्मिक स्थान पर दान करें।
2– तोता ना पालें।
3– नाक छिदवायें और 96 घंटे तक को उसको कायम रखें।
4– हरे रंग का प्रयोग बिल्कुल ना करें।
5– दो किलो मसूर की दाल किसी धार्मिक स्थान में दान करें।

बृहस्पति पाचवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके मान–सम्मान में अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। यदि आपके घर में पुरुष संतान जन्म लेती है, तो आपके परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत सुदृढ़ हो जाएगी। लिखाई–पढ़ाई में इस वर्ष आपको विशेष रूचि रहेगी। आप प्रकृति के रहस्य ढूंढने और समझने का प्रयत्न करेंगे। परीक्षा/प्रतियोगिता में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

वर्षफल में बृहस्पति का उपाय

बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपने घर के आस–पास के धार्मिक स्थान की साफ–सफाई करें।
2– साधु–संतों की सेवा करें।
3– गहरे पानी से बचें।

शुक्र पाचवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष अनैतिक प्रेम–संबंधों की वजह से बदनामी हो सकती है। यदि आप विवाहित हैं, तो विवाह का योग है, परन्तु आपको अपने माता–पिता की आज्ञा से ही विवाह करना चाहिए, अन्यथा संतान पक्ष से कष्ट हो सकता है। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष साधारण ही होगा।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– किसी धार्मिक स्थान में पांच दिन तक आटे का दान करें।
2– अपने मां–बाप की आज्ञानुसार विवाह करें।
3– गाय की सेवा करें।

शनि आठवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको सट्टे, लॉटरी, शेयर इत्यादि में पैसा नहीं लगाना चाहिए। इस वर्ष आपके मकान में तोड़–फोड़ हो सकती है। बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– नंगे पैर ना नहायें।
2– अपने नाम पर इस वर्ष कोई मकान ना खरीदें।
3– चांदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास रखें।
4– आठ किलो काले उड़द की दाल जल में प्रवाहित करें।

राहु सातवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है और स्वास्थ्य ठीक ना होने के कारण उनका स्वभाव थोड़ा चिड़चिड़ा हो सकता है। यदि आप बिजली विभाग या यातायात विभाग से संबंधित या उनके साथ मिलकर कोई कार्य करने वाले हैं, तो आपको घाटा हो सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो अपने साझेदार से आपका विवाद हो सकता है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– सात नारियल बहते पानी में बहायें।
2– चांदी की ईंट अपने घर में रखें।
3– वाहन चालक के रूप में कोई कार्य ना करें।
4– प्लास्टिक के डिब्बों में गंगाजल भरकर और उसमें चांदी के चौकोर टुकड़े डालकर अपने पास रखें।

केतु आठवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में होकर आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप अपनी मेहनत से धन अर्जित करेंगे। इस वर्ष आपको अपना चाल चलन ठीक रखना होगा, अन्यथा आप

घाटे में पड़ सकते हैं। इस वर्ष आपकी पदोन्नति होने की संभावना है।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपने कुत्ते को छत पर ना ले जायें।

2– जुआ, लॉटरी पर अपना धन व्यर्थ न करें।

3– चितकबरा कम्बल धर्म स्थान में दान करें।

लाल किताब वर्षफल

18:12:2019--17:12:2020

वर्षफल कुण्डली (47)

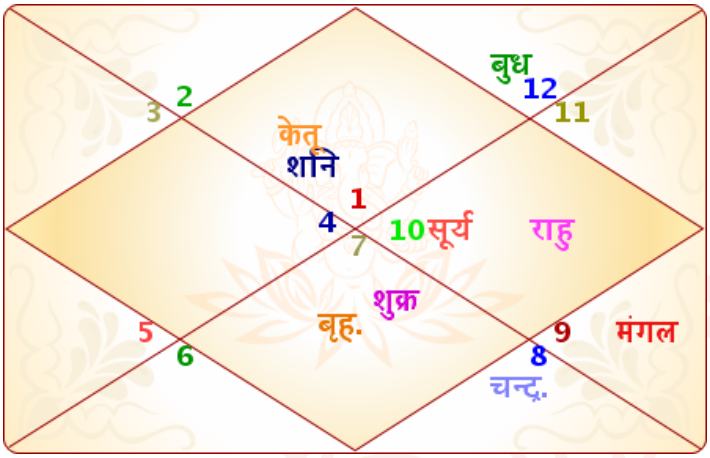

लग्न कुण्डली

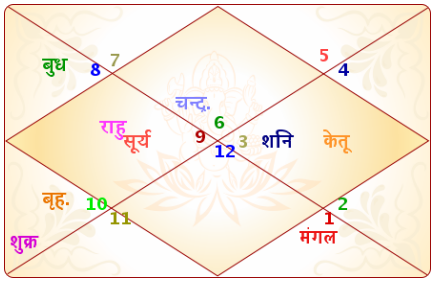

चन्द्र कुण्डली (लाल किताब)

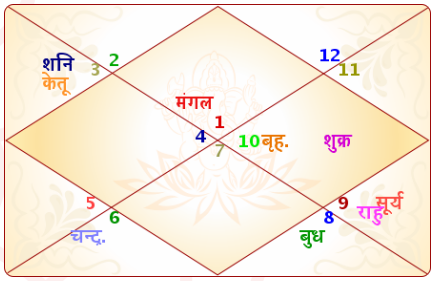

लाल किताब वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	10	5	ग्रह			शनि			हाँ	अशुभ भाव
चन्द्रमा	8	4	ग्रह		हाँ					अशुभ भाव
मंगल	9	1, 8	राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव
बुध	12	3, 6	ग्रह						हाँ	अशुभ भाव
बृहस्पति	7	9, 12	राशि						हाँ	अशुभ भाव
शुक्र	7	2, 7	ग्रह	हाँ	हाँ		हाँ			शुभ भाव
शनि	1	10, 11	ग्रह			सूर्य				अशुभ भाव
राहु	10		ग्रह						हाँ	अशुभ भाव
केतु	1		राशि				हाँ			

लाल किताब वर्षफल में भावों की स्थिति

भाव	भावस्थ ग्रह	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	भाग्य उत्प्रेरक
1	शनि, केतु	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
2		शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
3		बुध	मंगल	हाँ	राहु	केतु	बुध
4		चन्द्रमा	चन्द्रमा	हाँ	बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
5		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
6		बुध	बुध,केतु		बुध,राहु	शुक्र,केतु	केतु
7	बृहस्पति, शुक	शुक्र	शुक्र,बुध		शनि		शुक्र
8	चन्द्रमा	मंगल	मंगल,शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
9	मंगल	बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
10	सूर्य, राहु	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
11		शनि	शनि	हाँ			बृहस्पति
12	बुध	बृहस्पति	बृहस्पति		शुक्र,केतु	बुध,राहु	राहु

लाल किताब वर्षफल – 47

सूर्य दसवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपका भाग्य ठीक नहीं होगा। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचा सकते हैं। अपने पिता से आपका मतभेद हो सकता है एवं पिता के सुख में कमी भी आ सकती है। मशीनरी, तेल, लोहा और लकड़ी इत्यादि के व्यवसाय में आपको घाटा उठाना पड़ सकता है। आपका स्वभाव वहमी हो सकता है और आप अकारण ही क्रोधित हो सकते हैं।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– 43 दिन ताँबे के पैसे जल में प्रवाहित करें।
2– मांस–मछली और मदिरा का सेवन ना करें।
3– अपना सिर सफेद कपड़ों से ढक कर रखें।
4– भूरी भैंस की सेवा करें।

चन्द्रमा आठवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आमतौर पर यह वर्ष आपके लिए संघर्षमय हो सकता है। आध्यात्म और योग में आपकी रूचि हो सकती है। आपके ससुराल के लिए यह वर्ष सुखमय होगा। किसी का छोड़ा हुआ धन आपको मिल सकता है।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– धार्मिक स्थान में गुड़, केसर और सौंफ दान करें।
2– पितरों का श्राद्ध करें।
3– बुढ़ी स्त्रियों का आशीर्वाद लें।
4– शमशान से पानी लेकर उसे अपने घर में रखें।

5– सट्टे, लॉटरी इत्यादि से दूर रहें।

मंगल नौवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थित में नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके लिए यह वर्ष नये कार्यों को आरम्भ करने तथा आर्थिक दृष्टि से शुभ है। आपके लिए इस वर्ष होटल इत्यादि के कारोबार शुभ फलदायी होंगे। इस वर्ष आपके माता–पिता के तीर्थयात्रा का योग भी बन रहा है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम है। समाज में आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपने पास लाल रंग का रूमाल सदैव रखें।
2– धार्मिक स्थान में चावल, दूध और गुड़ का दान करें।
3– अपनी भाभी की सेवा करें।
4– अपने भाईयों से झगड़ा ना करें।
5– चितकबरे कुत्ते की सेवा करें।

बुध बारहवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने गुस्से पर काबू रखना चाहिए, अन्यथा बनी हुई बात बिगड़ सकती है। आपको जुआ, सट्टा या लॉटरी जैसे व्यसनों से भी दूर रहने की आवश्यकता होगी। आपकी संदेह और अनभिज्ञता से व्यापार में घाटा उठाना पड़ सकता है। अपने मित्रों से आपका अचानक बिगाड़ हो सकता है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– केसर का तिलक लगायें।
2– मिट्टी का घड़ा बहते हुए पानी में बहायें।
3– गुस्सा ना करें और अशुद्ध भाषा का प्रयोग ना करें।
4– बायें हाथ की बीच वाली अंगुली में स्टील का बिना जोड़ का छल्ला पहनें।

बृहस्पति सातवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके जीवन में कई सारे शुभ बदलाव दृष्टिगोचर होंगे। यदि आपका विवाह नहीं हुआ है, तो विवाह का प्रबल योग है। यदि आपका विवाह हो चुका है, तो आपके ससुराल से धन की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं, तो आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा। आपको ज्योतिष जैसे विषयों में विशेष रूचि हो सकती है। धार्मिक क्रिया–कलापों में आप सक्रिय होंगे।

वर्षफल में बृहस्पति का उपाय

बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपने घर के मंदिर में मुर्तियों की पूजा बिल्कुल ना करें। चित्रों की पूजा कर सकते हैं।
2– साधु–संतों की संगति ना करें।
3– अपना चाल–चलन ठीक रखें।
4– पीले कपड़े में सोना बांधकर अपने पास रखें।

शुक्र सातवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष साझेदारी के व्यापार में आपको काफी आय प्राप्त होगी। किसी स्त्री या अपने जीवनसाथी के सहयोग से आप कारोबार/नौकरी में प्रगति करेंगे। आप वैवाहिक सामग्री के व्यापार से आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। आपके जीवनसाथी और माता के बीच का संबंध काफी मधुर रहेगा। आप अपने पैतृक निवास की यात्रा कर सकते हैं। इस वर्ष आपको धन कमाने के लिए अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आपके जीवनसाथी का आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– सफेद गाय की सेवा ना करें।
2– अपने ससुराल से मधुर संबंध बनायें।
3– कांसे के बर्तन का इस्तेमाल करें।
4– मुत में या दान में कोई भी वस्तु ना लें।

शनि पहले भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर पहले भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, अपने खास मित्रों से आपका मनमुटाव हो सकता है। यदि आप अपना चाल–चलन ठीक नहीं रखेंगे, तो नौकरी/कारोबार में रूकावट या कई प्रकार की बाधाओं की संभावना हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी इस वर्ष बुरा प्रभाव पड़ सकता है। आप विशेषतः पेट की गड़बड़ी से परेशान हो सकते हैं। शिक्षा अथवा शिक्षा से संबंधी कार्यों में भी बाधायें आने की संभावना है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपने घर में किसी के जन्मदिन पर संगीतमय आयोजन ना करें।
2– बरगद के पेड़ की जड़ में मीठा दूध डालकर उसकी गिली मिट्टी का तिलक करें।
3– मांस–मदिरा से दूर रहें।
4– काला सूरमा जमीन में दबायें।

राहु दसवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके मान–सम्मान में वृद्धि होगी। राजनैतिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं, तो आपकी पदोन्नति हो सकती है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपने सिर को ढक कर रखें।
2– अपने अधिकारियों से मधुर संबंध रखें।
3– सफेद या शरबती रंग की टोपी या पगड़ी का इस्तेमाल करें।
4– अंधों को मीठा भोजन करायें।
5– 4 किलो गुड़/खाण्ड मंगलवार को जल में प्रवाहित करें।

केतु पहले भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर पहले भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष कमर या नेत्र संबंधी रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। पूर्व नियोजित यात्रा स्थगित हो जाएगी और यदि आपका तबादला होने वाला है, तो वह भी टल जाएगा। इस वर्ष स्त्री के रूप में आपके परिवार में कोई नया सदस्य जुड़ सकता है। यदि आप किसी विदेश यात्रा पर जा रहे हैं, तो 100 दिन के अन्दर ही वापस आ सकते हैं।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– चितकबरा कुत्ता पालें।
2– लाल रूमाल अपने पास रखें।
3– कोने के मकान में न रहें।

लाल किताब वर्षफल

18:12:2020--17:12:2021

वर्षफल कुण्डली (48)

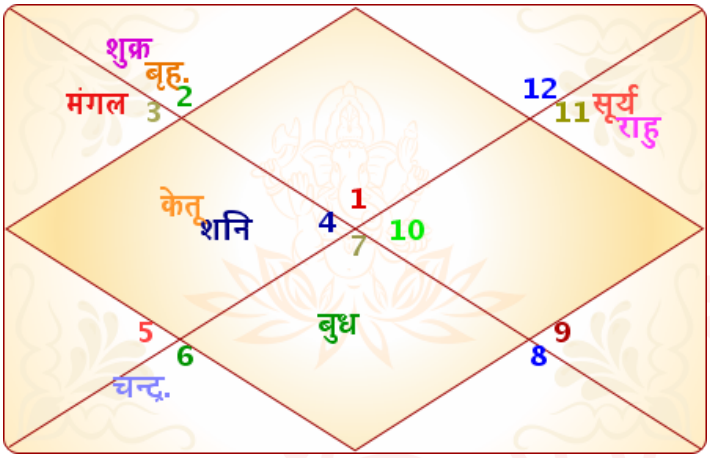

लग्न कुण्डली

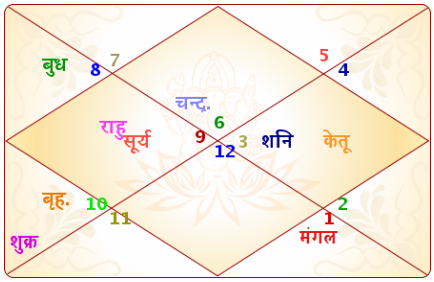

चन्द्र कुण्डली (लाल किताब)

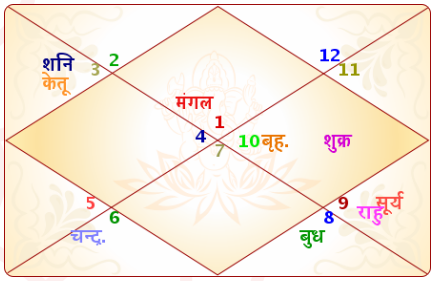

लाल किताब वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	11	5	राशि						हाँ	शुभ भाव
चन्द्रमा	6	4	ग्रह			केतु			हाँ	अशुभ भाव
मंगल	3	1, 8	ग्रह	हाँ			हाँ			शुभ भाव
बुध	7	3, 6	ग्रह	हाँ			हाँ			शुभ भाव
बृहस्पति	2	9, 12	ग्रह	हाँ						शुभ भाव
शुक्र	2	2, 7	ग्रह				हाँ			शुभ भाव
शनि	4	10, 11	राशि						हाँ	अशुभ भाव
राहु	11		राशि						हाँ	अशुभ भाव
केतु	4		ग्रह			चन्द्रमा	हाँ	हाँ	हाँ	

लाल किताब वर्षफल में भावों की स्थिति

भाव	भावस्थ ग्रह	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	भाग्य उत्प्रेरक
1		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
2	बृहस्पति, शुक	शुक	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
3	मंगल	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
4	शनि, केतु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
5		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
6	चन्द्रमा	बुध	बुध,केतु		बुध,राहु	शुक,केतु	केतु
7	बुध	शुक	शुक,बुध		शनि		शुक
8		मंगल	मंगल,शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
9		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
10		शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
11	सूर्य, राहु	शनि	शनि				बृहस्पति
12		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक,केतु	बुध,राहु	राहु

लाल किताब वर्षफल – 48

सूर्य ग्यारहवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको सावधान और सचेत रहने की जरूरत है, अन्यथा दुर्घटना हो सकती है। आपके साले का स्वास्थ्य चिन्तनीय हो सकता है। आपके रिश्तेदार आपके धन का अपव्यय कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं हो सकता है। अपने पिता से आपके संबंध पूरी तरह से खराब हो सकते हैं। पदोन्नति में बाधायें आ सकती हैं। सरकारी कार्यों में आपको घाटा उठाना पड़ सकता है।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– 43 दिन तक रेत पर बिस्तर बिछाकर सोयें।
2– मांस–मछली का सेवन ना करें।
3– रात को अपने सिरहाने मूली रखकर सोयें।
4– झूठ ना बोलें।

चन्द्रमा छठे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में छठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको विदेशी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होगा। आपके शत्रुओं की पराजय होगी और आपके भाई–बन्धु और मित्र आपकी सहायता करेंगे।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपने पिता को अपने हाथों से दूध पिलायें।
2– अपने भेद दूसरों को ना बतायें।
3– खरगोश पालें।
4– रात में दूध का सेवन ना करें।

5– मुत में पानी का दान ना करें।

मंगल तीसरे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, पैतृक सम्पत्ति के बंटवारे में आपको कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। माता–पिता तथा भाई–बन्धुओं से आपका मनमुटाव हो सकता है। आपके भाई या चाचा का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। गलत प्रेम–संबंधों के उजागर होने से भी आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि आप पैसों का लेन–देन बिना लिखित विवरण के करते हैं, तो यह ठीक नहीं है। आपको खून से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं।

वर्षफल में मंगल का उपाय

मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– अपनी अंगुली में हाथी दांत का छल्ला पहनें।
2– अपने क्रोध पर काबू रखें।
3– अपने भाईयों की सहायता करें।
4– खाने–पीने पर विशेष ध्यान दें, अन्यथा पेट से सम्बन्धित बीमारी हो सकती है।
5– हाथी दांत से बनी वस्तुएं अपने घर में ना रखें।

बुध सातवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपको अपने क्रोध पर काबू रखने की आवश्यकता होगी, अन्यथा आपका अनुचित व्यवहार आपकी मान–प्रतिष्ठा के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। यदि आप अपना व्यापार साझेदारी में करते हैं, तो इस वर्ष आपको घाटा उठाना पड़ सकता है। आपके भाई अथवा आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

वर्षफल में बुध का उपाय

बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– किसी भी कार्य को करने से पहले मीठा खायें।
2– हीरे की अंगुठी पहनना लाभदायक होगा।

3– घर में हरी घास रोपें।

बृहस्पति दूसरे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता को सोने, चांदी के व्यापार में घाटा हो सकता है। उनको कम पूंजी वाले व्यापार में हाथ आजमाना चाहिए। इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति के बंटवारे में आपको घाटा हो सकता है। आपको इस वर्ष अपने गुस्से पर काबू रखने की आवश्यकता है।

वर्षफल में बृहस्पति का उपाय

बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– घर के सामने के गड्ढों को मिट्टी से भरवायें।
2– सोने चांदी से सम्बन्धित व्यापार ना करें।
3– हल्दी या केसर का तिलक लगायें।
4– अपने घर का एक हिस्सा अधूरा ही बिना बनवाये छोड़ें।
5– अपना चाल–चलन ठीक रखें।
6– नवविवाहिता लड़की को पतीशे की मिठाई दें।

शुक्र दूसरे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप अपनी कड़ी मेहनत से सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विवाहित हैं, तो अपने जीवनसाथी का आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धार्मिक प्रवृति भी प्रबल होगी। प्रेम संबंधों में धोखे की वजह से आप इस वर्ष ऐसे किसी भी संबंध से दूर ही रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं, तो विवाह का योग भी बन सकता है।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– आलू और दही का दान करें।
2– जानवरों से घृणा ना करें।
3– कपिला गाय की सेवा करें।

शनि चौथे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष मछली का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए और शराब इत्यादि मादक पदार्थों से दूर रहना चाहिए। आपको हृदय से संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। पिता से आपके संबंधों में कड़वाहट आ सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है। यदि आप राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय हैं, तो आपके प्रयास विफल हो सकते हैं।

वर्षफल में शनि का उपाय

शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– कुएं में दूध गिरायें।
2– अपने भोजन में से एक हिस्सा मछलियों, कौओं या भैंस को खिलायें।
3– इस वर्ष काले कपड़े ना पहनें।
4– हरे रंग से बचें।
5– 4 पैक शराब जल में प्रवाहित करें।

राहु ग्यारहवें भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके पिता से आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है और उनका स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। इस वर्ष आपको किसी भी प्रकार के विवाद से बचना चाहिए अन्यथा आप चोटग्रस्त हो सकते हैं। इस वर्ष लाल या नीला कपड़ा पहनना खतरनाक हो सकता है।

वर्षफल में राहु का उपाय

राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– नीलम या नीले रंग का कोई भी रत्न इस वर्ष नहीं पहनना है और ना ही अपने पास रखना है।
2– घर में बिजली के खराब उपकरण ना रखें।
3– सिर पर चोटी रखें या सफेद टोपी से सिर ढक कर रखें।

केतु चौथे भाव में

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु अशुभ स्थिति में है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपको अपने खान–पान पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, अन्यथा आपको मधुमेह संबंधी रोग होने की भी संभावना बन सकती है। इस वर्ष अपने कुल पुरोहित से अपना संबंध मधुर बनाकर रखना चाहिए। कुत्ते के काटने की भी संभावना हो सकती है, अतः आपको सावधान और सचेत रहने की आवश्यकता है।

वर्षफल में केतु का उपाय

केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1– किसी धार्मिक स्थान में हल्दी, केसर या चने की दाल दान करें।

2– कुत्तों को ना मारें।

3– कुल–पुरोहित की सेवा करें।

लाल किताब उपाय से संबंधित सावधानियाँ और सामान्य नियम

1– एक दिन में केवल एक ही उपाय करें।

2– सभी उपाय सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले करें। जो उपाय सूर्यास्त के बाद करने के लिए लिखा गया है, केवल उसे ही सूर्यास्त के बाद करें।

3– सबसे पहले छोटे उपाय, जो एक दिन के होते हैं, उन्हें करना चाहिए।

4– लंबे चलने वाले उपाय लागातार करें।

5– मासिक धर्म के दौरान महिलायें मंदिर जाने वाले उपाय न करें, इस दौरान अपने खून से संबंधित परिवार के किसी सदस्य से उपाय करवायें।

6– जिस उपाय को किसी खास दिन शुरू करने के लिए न कहा गया हो, उस उपाय को करने के लिए किसी दिन या तिथि जैसे अमावस्या, पूर्णिया आदि का विचार न करें। एक दिन वाले उपाय चौथ, नवमी एवं चतुर्दशी को कर सकते हैं, लेकिन लंबे चलने वाले उपाय इन तिथियों को शुरू न करें।

7– कुछ उपाय सप्ताह, मास या 43 दिन लगातार करने होते हैं, इन उपायों को बाद में शुरू करें। ध्यान रखें कि ऐसे उपाय बीच में न टूटें, अन्यथा शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे। यदि लंबे उपाय करते समय किसी कारण से उपाय बीच में बंद करना पड़े तो उस दिन उपाय करने के बाद थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें और जब दुबारा उपाय शुरू करना हो तो वह चावल धर्म स्थान में दे दें या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। उसके बाद उपाय शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल प्राप्त होगा।

8– यदि कोई उपाय जिंदगी भर के लिए करना है तो पहले उसे शुरू कर साथ––साथ एक––एक करके दूसरे उपाय करें।

9– जिस चीज/औजार से उपाय करें या जो भी सामान उपाय के लिए ले जायें, उसे वहीं छोड़ दें। लंबे चलने वाले उपाय में औजार आखिरी दिन छोड़ें।

10– जो चीज जल प्रवाह करें या धर्म स्थान में दें, उस दिन उस चीज का सेवन न करें।

11– उपाय के दिनों में शारीरिक संबंध स्थापित न करें।